चन्दामामा
मार्च १९८२

५०% बचाइये

दो की ज़रूरत हो तो
सिर्फ़ एक ख़रीदिए

कॅम्लिन की 'अन्ब्रेकेबल' पेंसिल ज़्यादा दिन चलती है।

ख़ूब अच्छी तरह कॉम्प्रेस्ड् की गयी लेड और सावधानीपूर्वक अनुकूल की गयी लकड़ी दोनों को एक विशेष प्रक्रिया द्वारा एक-दूसरे से जोड़ दिया गया है। यह प्रक्रिया स्वयं कॅम्लिन की अपनी बनायी हुई है। इसके कारण पेंसिल टूटती नहीं। नोक आसानी से बन जाती है। आपको ऐसी पेंसिल मिलती है जो दूसरी पेंसिलों से दुगनी चलती है। अब कॅम्लिन की 'अन्ब्रेकेबल' पेंसिलों पर एक विशेष निशान होता है, ताकि आप इन्हें आसानी से पहचान ले। जब भी आप पेंसिले ख़रीदें इस-निशान का ध्यान रखें और पैसे बचायें।

इन नामो को ध्यान में रखिए जो आपके लिए अच्छी क्वालिटी की गारंटी हैं।

त्रिवेणी, सुप्रीम, एक्सेला, रीगल

कॅम्लिन

अन्ब्रेकेबल' पेंसिलें

कॅम्लिन प्राइवेट लिमिटेड
आर्ट मटीरियल डिवीज़न,
बम्बई ४०० ०५९

कॅमल आर्ट मटीरीयल बनाने वालों की देन

VISION/795/R/HIN

Results of Chandamama—Camlin Colouring Contest No. 22 (Hindi)

1st Prize: K. M. Neena Bisht, Kanpore-208 009. *2nd Prize:* Manoj Motiramji Choudhari, Hinganghat. *3rd Prize:* Surbhi Rastogi, Meerut City. *Consolation Prizes:* Supriya Chowdhry, Hyderabad-500 029. Pawan Kumar Arora, Saharanpur. Atul Vardhan Sharma, Bah-283 104 Raj Kishor Prusay, Tharjirimangala. Pradeep Gawade, Indore.

कैडबरी की 'जॅम जैसी कविता' प्रतियोगिता
बधाई विजेताओं!
पहला इनामः
१,००० रु. का उपहार चेक प्रत्येक को—
दोनों भाषाओं के लिए
अंग्रेजी विजेताः
वैष्णवी जयकुमार
कलकत्ता
हिन्दी विजेताः
उल्फत शेख
कोचीन
दो दूसरे इनामः
५०० रु. का उपहार चेक प्रत्येक को—दोनों भाषाओं के लिए
अंग्रेजी विजेताः
१) श्रीफल मेहता
बम्बई
२) पुनीत सैनी
बम्बई
हिन्दी विजेताः
१) राजदुलारी कपूर
नई दिल्ली
२) किसलय किशोर
पटना
तीन तीसरे इनामः
३०० रु. का उपहार चेक प्रत्येक को—दोनों भाषाओं के लिए
अंग्रेजी विजेताः
१) उमा शिवप्रसाद
बम्बई
२) गौतम त्रिपाठी
बंद्रीपाका
३) चेरुवा थियोडोर
मद्रास
हिन्दी विजेताः
१) अनुराग सूरी
देहरादून
२) प्रभा कुमारी
नवादा
३) विकास मरवाहा
भोपाल
साथ में २०० सांत्वना पुरस्कार— प्रत्येक भाषा के लिए!
११ रु. का उपहार चेक प्रत्येक को. सभी विजेताओं को व्यक्तिगत रूप से डाक द्वारा सूचित किया जाएगा.
सभी पुरस्कार विजेता गुणी बच्चों को कैडबरी की ओर स बहुत बहुत बधाई! और जो इस बार पुरस्कार नहीं ले सके, उनके लिए अगली बार फिर किस्मत आजमाने की शुभकामनाएं, क्योंकि याद रखिए... कैडबरिज जॅम्स है ही ऐसे, मीठे मीठे सपनों जैसे!
Cadbury's
GEMS
कैडबरिज़ जॅम्स है ही ऐसे, मीठे मीठे सपनों जैसे
OBM/7914 HN

Statement about ownership of CHANDAMAMA (Hindi)
Rule 8 (Form VI), Newspapers (Central) Rules, 1956

1.	*Place of Publication*	...	'CHANDAMAMA BUILDINGS' 188, Arcot Road Vadapalani, Madras-600 026
2.	*Periodicity of Publication*	...	MONTHLY 1st of each calendar month
3.	*Printer's Name*	...	B. V. REDDI
	Nationality	...	INDIAN
	Address	...	Prasad Process Pvt Limited 188, Arcot Road, Vadapalani Madras-600 026
4.	*Publisher's Name*	...	B. VISWANATHA REDDI
	Nationality	...	INDIAN
	Address	...	Chandamama Publications 188, Arcot Road, Vadapalani Madras-600 026
5.	*Editor's Name*	...	B. NAGI REDDI
	Nationality	...	INDIAN
	Address	...	'Chandamama Buildings' 188, Arcot Road, Vadapalani Madras-600 026
6.	*Name & Address of individuals who own the paper*	...	CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND Beneficieries: 1. B. V. HARISH 2. B. V. NARESH 3. B. V. L. ARATI 4. B. L. NIRUPAMA 5. B. V. SANJAY 6. B. V. SHARATH 7. B. L. SUNANDA 8. B. N. RAJESH 9. B. ARCHANA 10. B. N. V. VISHNU PRASAD 11. B. L. ARADHANA 12. B. NAGI REDDI (JR)

All Minors, by Trustee:
M. UTTAMA REDDI, 14, V.O.C. Street, Madras-600 024

I, B. Viswanatha Reddi, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

1st March 1982

B. VISWANATHA REDDI
Signature of the Publisher

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'

संचालक : नागिरेड्डी

इस महीने की बेताल कथा "मनोरंजन की विद्याएँ" बड़ी सूझ-बूझ से भरी रचना है ।

हमारे समाज में कुछ ऐसे बुजुर्ग होते हैं जो छोटे व्यक्तियों को नाहक़ सलाहें देते रहते हैं । वे सलाहें कैसे अनर्थदायक होती हैं, इसका परिचय हमें "मुफ़्त की सलाहें" नामक कहानी में मिल जाता है ।

अमर वाणी

परनिंदासु पांडित्यं, स्वेषु कार्ये ष्वनुध्यमः ।
प्रद्वेषश्च गुणज्ञेषु, पंथानो ह्यापदां त्रयः ।।

[दूसरों की निंदा करने में दक्षता, निजी कार्यों के प्रति उपेक्षा, विवेकशील व्यक्तियों के साथ शत्रुता–ये तीनों गुण मानव के पतन के लिए कारणभूत बन जाते हैं ।]

वर्ष : ३४ मार्च १९८२ अंक : ७

एक प्रति : १-७५ : : वार्षिक चन्दा : २१-००

सोलह आने की दोस्ती

ससुराल में पहली बार क़दम रखने वाली अमला सारा घर एक बार देखकर अपनी क़िस्मत पर यक़ीन न कर पाई। क़िले जैसा मकान, नौकर-चाकर–उसे यह सब एक सपना जैसे लगने लगा।

लगभग तीन महीने पहले अमला एक दिन शाम को नदी से पानी भरकर घर लौट रही थी। रास्ते में एक सुंदर युवक सामने से गुजरा, उसने पल-दो पल उसकी ओर परख कर देखा और पूछा–"तुम बुरा न मानोगी तो मैं अपना परिचय देता हूँ! मेरा नाम सुदर्शन है, तुम्हारा नाम क्या है? घर कहाँ है?"

एक अजनबी के मुंह से यह सवाल सुन कर अमला घबड़ा गई, उनके सवालों का जवाब देकर जल्दी अपने घर चली गई।

इस घटना के दस दिन बाद सुदर्शन अपनी माँ को साथ लेकर अमला के घर पहुँचा। तब जाकर असली बात अमला की समझ में आई। पिछले दिनों में नदी के किनारे सुदर्शन ने अमला से जब मुलाक़ात की थी, उस दिन वह अपने माता-पिता के साथ उसी गाँव में एक दूसरी कन्या को देखने आया था। उस लड़की का पिता सुदर्शन के पिता का दोस्त था।

वह कन्या अपने को हद से ज्यादा सजा कर अपनी वाक् चातुरी का परिचय देना चाहती थी, इसलिए सुदर्शन को वह पसंद न आई, इस पर उसका पिता नाराज़ होकर पहले ही अपने गाँव लौट गया था। थोड़ी देर बाद निकलने वाले सुदर्शन की अमला से मुलाक़ात हो गई थी।

अमला की सौतेली माँ उसकी क़िस्मत पर ईर्ष्या से भर उठी। पर अड़ोस-पड़ोस वालों की निंदा का पात्र न बने, इस डर से उसने इस रिश्ते को मान लिया था।

मुनीश राठौर

ससुराल में क़दम रखते ही अमला समझ गई कि यह विवाह उसके ससुर के लिए बिलकुल पसंद नहीं है। वैसे सुदर्शन का पिता दहेज की चिंता नहीं रखता था, मगर उसका दुख यही था कि उसका पुत्र उसके मित्र की कन्या के साथ विवाह करने को तैयार नहीं हुआ।

अमला ने एक दिन अपने पति से कहा—"मेरे सिर्फ़ एक ही दोस्त हैं, जो इसी गाँव में हैं। मैं उन्हें एक बार देखना चाहती हूँ। कई सालों से मेरे मन में बस, यही एक इच्छा रह गई!"

सुदर्शन ने अचरज में आकर पूछा—"इस गाँव में तुम्हारा कोई दोस्त है? कौन है वह?"

"आप आश्चर्यचकित न होइयेगा! उस दोस्त की कहानी यों है!" इन शब्दों के साथ अमला ने सारी कहानी सुनाई।

अमला के पैदा होते ही उसकी माँ मर गई। इस पर उसके पिता ने दूसरी शादी कर ली। सौतेली माँ अमला को दिन-रात तंग करती थी। दस साल की उम्र वाली उससे घर के सारे काम-काज करवा देती, उसे स्कूल में पढ़ने के लिए भी न भेजती।

उन्हीं दिनों में सौतेली माँ के छोटे भाई की शादी तै हो गई। इस पर दस दिन

पहले ही सौतेली माँ उस शादी में भाग लेने गई। जाते वक़्त उसने घर के सभी कमरों में ताले लगाये। पर आगे वाले कमरे में एक चूल्हा, थैली में थोड़ा-सा चावल उसके वास्ते छोड़ गई।

"मैं दस दिन में लौट आऊँगी। मैं तुम्हारे हाथ बीस आने दे जाती हूँ। बीस आने खर्च करके तुम छाछ व सब्जी खरीद कर महारानी के जैसे पकाकर खा लो।" यों कहकर वह अमला के हाथ बीस आने रखकर अपने बच्चे और पति के साथ चली गई।

अमला दोनों जून के लिए एक साथ खाना बना लेती, दुपहर का खाना खाने के

कुल मिलाकर मुझे सोलह आने की जरूरत पड़ेगी। यदि कोई वक़्त पर मदद दे तो मैं अपने घर पहुँच कर हमारे नौकर के द्वारा तुरंत वह रक़म भेज दूँगा।"

पर किसी ने उस सज्जन की सहायता नहीं की। उस पर अमला को बड़ी दया आ गई। वह ड्योढ़ी तक पहुँची। उसे पुकार कर नज़दीक आते ही बोली–"सोलह आने की बात बाद की है, पहले यह बताइये कि आप ने खाना खाया है या नहीं?"

"मुझे तुरंत अपने गाँव जाना है, बेटी! यह बताओ, तुम्हारा नाम क्या है!" उस सज्जन ने कहा।

बाद खिड़की के पास बैठकर गली में आने-जाने वाले लोगों को देखते अपना वक़्त बिता देती।

एक दिन दुपहर के वक़्त एक सज्जन जिसके बदन पर धोती के अलावा कुछ न था, गली में खड़े हो रास्ते से गुजरने वालों की ओर अपना हाथ बढ़ाकर दीनता पूर्वक कह रहा था–"ग्रहण के समय समुद्र स्नान करने आया। अपने कपड़े समुद्र के किनारे रखकर मैं नहा रहा था। मेरी आँखों में धूल झोंककर कोई उठा ले गया है। अगर मेरे गाँव पहुँचना है, तो घाट तक किराये की घोड़े-गाड़ी पर जाकर वहाँ पर मुझे नाव पकड़नी है। इसके वास्ते

अमला ने अपना नाम बताकर कहा–"मैं सोलह आने दे दूँगी, पहले आप खाना तो खा लीजिए।" यों कहकर उसने रात के लिए जो खाना बचा रखा था, उसमें मट्ठा परोस कर खाना खिलाया।

भोजन करने के बाद उस सज्जन ने अमला को कई कथा-कहानियाँ सुनाकर खूब हँसाया।

इसके बाद अमला ने पूछा–"आप ने अपने गाँव का नाम नहीं बताया?"

"तुम्हारे ही नाम का गाँव है, याने अमलापुरम है!" यों जवाब देकर वह सज्जन हँस पड़ा। इसके बाद उस सज्जन को ओढ़ने के लिए अमला ने अपना सफ़ेद

लहँगा दिया। उसमें कई जगह पैबंद लगे थे, उसे ओढ़ते हुए वह सज्जन बोला–" मैं इसी माप का एक रेशमी लहँगा मेरे गाँव में सिलवा कर भेज दूँगा।"

अमला के हाथ से सोलह आने लेते वक़्त उस सज्जन के हाथ कांप उठे, उसकी आँखों में पानी भर आया।

"बेटी, अगर तुम कभी मेरे गाँव आ जाओगी तो मेरे घर ज़रूर आ जाओ। इस उम्र में शायद तुम नहीं समझ पाओगी, लेकिन विपदा के समय मदद देनेवाले ही सच्चे दोस्त होते हैं! तुम कागज़ का एक टुकड़ा दो तो मैं अपना पता लिखकर दूँगा।" इसके बाद अमला के हाथ से कागज़ व क़लम लेकर उस सज्जन ने अपना नाम और पता लिखकर दिया, तब अपने गाँव चला गया।

अनपढ़ अमला ने उस कागज़ को अपने कपड़ों के नीचे पेटी में सुरक्षित छिपा रखा। दो दिन बाद एक आदमी ने रेशमी लहँगा और सौ रुपये लाकर अमला के हाथ दिया और बोला–"बाबूजी ने बताया है कि अमलापुरम आने पर उनके घर ज़रूर आना है।"

सौ रुपयों में से बारह आने ही खर्च हुए थे, इस बीच अमला की सौतेली माँ आ गई। उसे जब सारी बातें मालूम हुई, तब उसने अमला के हाथ से बाक़ी सारी रक़म ले ली। इस घटना के दो महीने बाद अमला का पिता बीमार पड़ा और

अचानक मर गया। सौतेली माँ का मायका दूर का एक गाँव था। इसलिए अनाथा अमला अपनी सौतेली माँ के साथ उस गाँव में चली गई।

अमला ने अपने पति को यह सारी कहानी सुनाकर कहा—"शादी का रिश्ता क़ायम होने के पहले जब मुझे मालूम हुआ कि आप अमलापुरम के निवासी हैं, तब मुझे बड़ी खुशी हुई। पिता का प्यार कैसे होता है, मैंने उनके द्वारा समझ लिया।"

"यह कहानी तो अच्छी है, पर उनका नाम व घर का पता तो मालूम होना चाहिए न! तुम पढ़-लिख नहीं सकती, इससे कैसी तक़लीफ़ होती है, जानती हो? तुम्हारे दोस्त ने जो कागज़ दिया है, वह ले आओ तो!" सुदर्शन ने कहा।

अमला पेटी के अन्दर रेशमी लहंगे में छिपाया गया कागज़ ले आई और अपने पति के हाथ दे दिया। सुदर्शन ने उसे पढ़ा, जोर से चुटकी बजाकर बोला—"सुनो, तुम्हारे बचपन का दोस्त कोई और नहीं, मेरे पिताजी ही हैं!"

यह जवाब पाकर अमला चकित रह गई। उम्र के बढ़ने के साथ चेहरे पर झुर्रियाँ आ गई थीं, साथ ही उस सज्जन के सारे बाल सफ़ेद हो चले थे, इसलिए अमला अपने बचपन के दोस्त को पहचान न पाई। सुदर्शन ने अपने पिता को बुला कर वह कागज़ दिखाया और पूछा—"पिताजी, आप इसे पहचान सकते हैं?"

सुदर्शन के पिता ने उस कागज़ को तथा अमला को भी एक-दो बार परख कर देखा और बोला—"ओह, उस दिन मेरी मदद करने वाली अमला हो तुम?" इन शब्दों के साथ खुशी के मारे उसने अपने रूमाल से आँसू पोंछ लिये।

"पिताजी, आप दोनों की दोस्ती बड़ी गहरी है। बारह साल बाद आप दोनों को फिर से मिलाया है!" सुदर्शन ने कहा।

"हाँ-हाँ, क्यों नहीं? हमारी दोस्ती पूरे सोलह आने की है!" सुदर्शन के पिता ने कहा।

[४]

[राजा मंदरदेव का क़िला जब कुंडलिनी द्वीप के सैनिकों के हाथों में चला गया, तब वह अपने चार सैनिकों के साथ नावों में समुद्र पर चल पड़ा। उसी वक्त नावों पर आये हुए कुछ लोगों के साथ उनकी लड़ाई हुई। पर उन नावों में शिवदत्त था। मंदरदेव ने उससे कुंडलिनी राज्य के बारे में पूछा। बाद–]

मंदरदेव को शिवदत्त की बातें सुनने पर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसकी समझ में न आया कि बड़ा अनुभवी व साहसी समरसेन शासन कार्यों में कैसे भूल कर पाया? तब उसे लगा कि दूर के द्वीपों की साहसिक यात्राएँ करके वह जो भारी संपत्ति ले आया, उससे कुंडलिनी द्वीपवासियों का उपकार न हुआ, बल्कि उनकी हानि ही हुई।

"शिवदत्त, मैंने सोचा था कि समरसेन मांत्रिक द्वीप से जहाज भर जो धन के ढेर लाया है, उसके द्वारा वहाँ के निवासियों को समस्त प्रकार के सुख प्राप्त हुए हैं।" मंदरदेव ने कहा।

ये बातें सुन शिवदत्त जोर से हँस पड़ा और बोला–"मंदरदेव, वह भारी संपत्ति ही कुंडलिनी द्वीप में अराजकता का कारणभूत बन गई। जब हम लोग धन

इन शब्दों के साथ शिवदत्त ने फिर शुरू किया–"जब राज्य का खजाना सोना व चांदी से भर गया, तब राज्य-शासन के मामलों में राजा चित्रसेन का उत्साह मंद पड़ गया। समरसेन ने भी सोचा कि राज्य के लिए आवश्यक संपत्ति ले आया हूँ। अब जनता के लिए किस बात की कमी है?"

राज्य के कर्मचारियों का वेतन जब बढ़ गया, तब वे लोग भी विलासमय जीवन बिताने लगे। उधर गाँव के किसानों को भी कौड़ी भर कर चुकाने की ज़रूरत न रही। उन्हें भी कड़ी मेहनत करके फसल पैदा करने की जरूरत ज्यादा न रही। वे अपने परिवार के लिए आवश्यक अनाज पैदा करके बाक़ी खेत बंजर छोड़ते गये। परिणाम स्वरूप खाद्य पदार्थों की कमी हो गई।

इन कारणों से शहरों के लिए आवश्यक खाद्य पदार्थों का आना बंद हो गया। शहर के लोग दल बांधकर गाँवों में पहुँचे और एक से बढ़कर एक होड़ लगाकर ज़्यादा मूल्य देकर अनाज खरीदने लगे। इस कारण किसानों ने धान, तरकारी वगैरह के दाम और बढ़ा दिये।

धीरे-धीरे सारे राज्य में अराजकता फैलती गई। ज़्यादा रक़म देकर शहर के

के ढेरों के साथ नाव पर कुंडलिनी द्वीप में पहुँचे, तब राजा चित्रसेन तथा जनता ने भी हमारा अपूर्व स्वागत किया। इसके बाद लगातार एक महीने तक राजधानी नगर में उत्सव मनाये गये। राजा चित्रसेन ने जनता पर जो छोटे-मोटे कर लगाये थे, वे भी इस मौक़े पर रद्द कर दिये गये। राज कर्मचारियों के वेतन दुगुने व तिगुने बढ़ाये!"

मंदरदेव ने पूछा–"तब तो कुंडलिनी राज्य के हर एक व्यक्ति ने समस्त प्रकार के सुखों का अनुभव किया है न?"

"मंदरदेव! आप सावधानी से सुनिये, सारी बातें बिस्तारपूर्वक सुना देता हूँ!"

जो लोग खाद्य पदार्थ खरीद न पाये, वे दल बांध कर गाँवों पर टूट पड़े और रात के समय खाद्य पदार्थ लूटने लगे। इसके बदले में गाँव के किसानों ने अनाज के बोरों के दाम उसके वजन के बराबर का सोना तै किया, साथ ही वे भी दल बांध कर हथियार ले अपनी आत्मरक्षा करने को तैयार हो गये।

वैभव और विलासों में डूबे हुए राजा चित्रसेन को शहर और गाँवों की इस बुरी हालत का कुछ पता न था। सच बात तो यह है कि राजा के साथ मैंने तथा चित्रसेन ने भी यही गलती की। असली बात यह थी कि देश के किस कोने में क्या हो रहा है, इसका पता हमें भी न था। वैसे खजाने से धन पानी की तरह जनता के बीच बह रहा था, फिर भी धन के जरूरतमंदों की संख्या भी कम न थी। क्योंकि खाद्य पदार्थों का मूल्य पहले से हज़ार और दो हज़ार गुने ज़्यादा बढ़ गया था, इस वजह से लोगों के पास अधिक धन के जमा होने पर भी वह उनके खर्च के लिए पर्याप्त न हो रहा था।

उधर राजा चित्रसेन अपने मनोरंजन के वास्ते प्रति दिन जो कार्य-क्रम चलाते थे, वे भी बड़े ही विचित्र ढंग के होते थे। इस वक़्त अगर मैं उन कार्यक्रमों के बारे में सोचता हूँ तो मुझे सचमुच उन्हें मनोरंजन के कार्यक्रम मानने में भी लज्जा होती है। मगर उन दिनों में उन

CHITRA
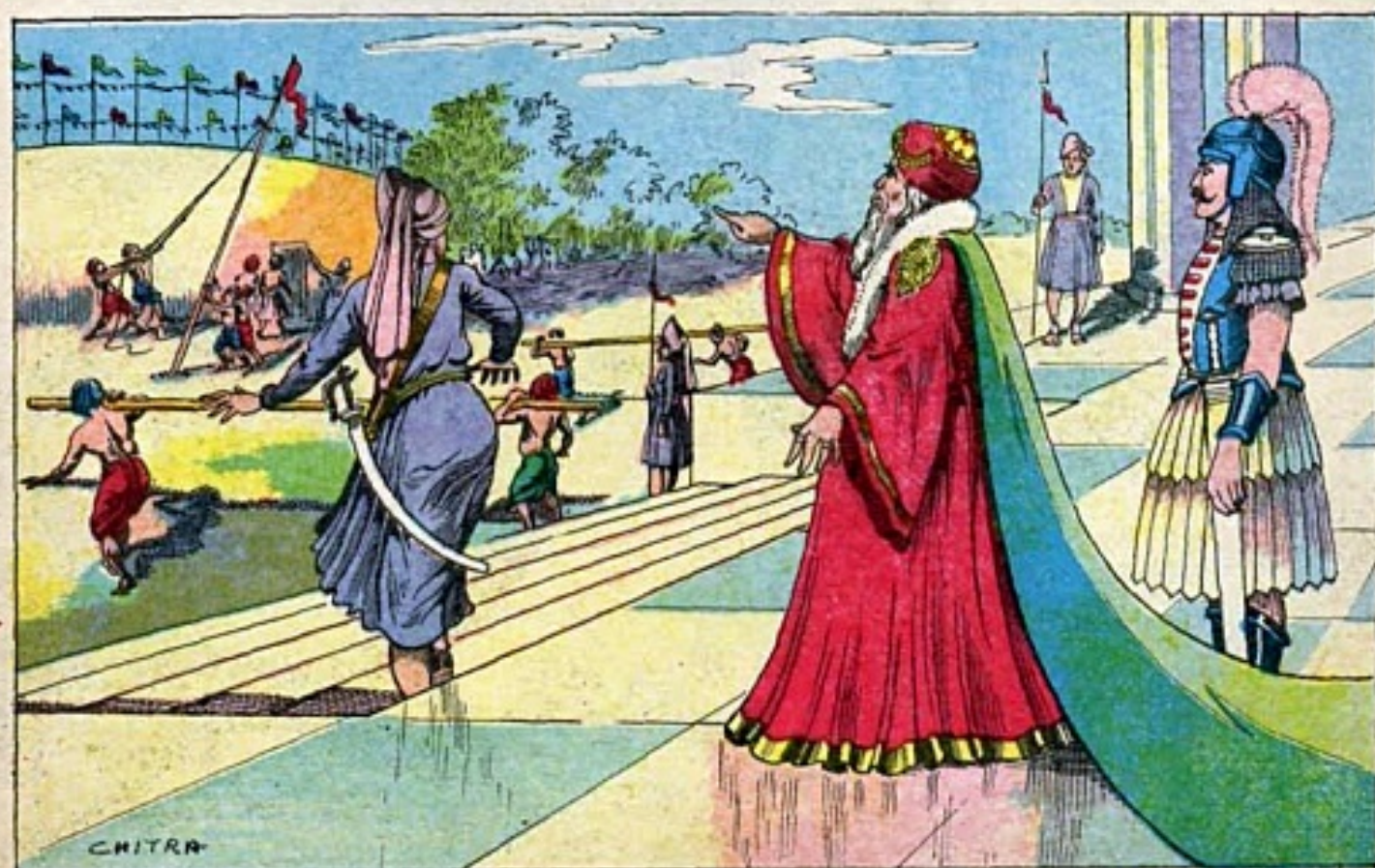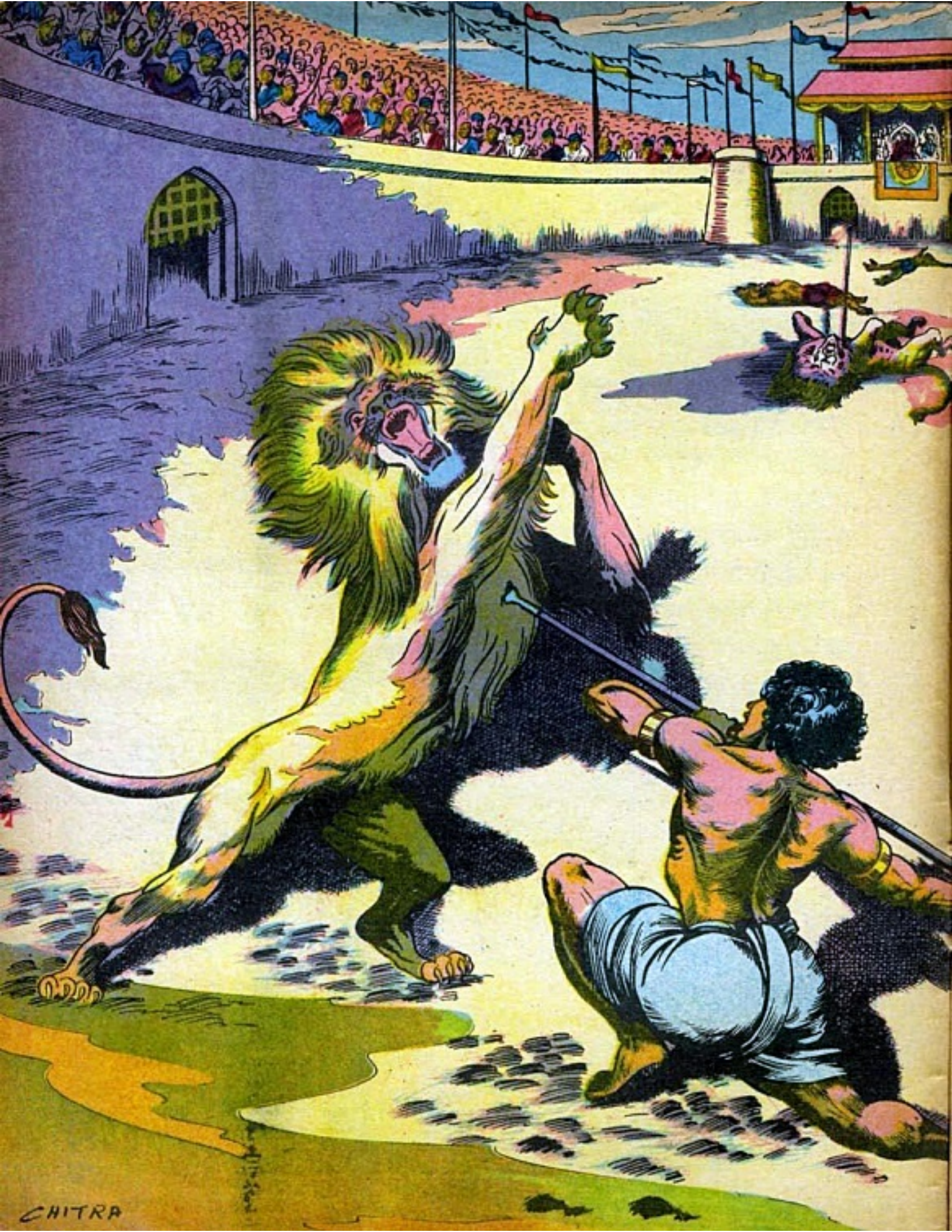
कार्यक्रमों को देखने के लिए लोग हज़ारों की संख्या में दूर-दूर के प्रदेशों से आ जाया करते थे।

उन मनोरंजन के कार्यक्रमों की कहानी सुनिये: उसी वक़्त जंगल से पकड़ कर लाये गये खूँख्वार शेर या सिंह को लोहे के सीकचों के बीच छोड़ दिया जाता था। अगर कोई सिर्फ़ तलवार की मदद से उसका संहार कर देता तो उसे शेर या सिंह के बराबर वजन का सोना पुरस्कार में दे दिया जाता था। धन के लोभ में पड़कर कई साहसी युवक सिंह के साथ लड़ने के लिए आगे आ जाया करते थे। कई बदक़िस्मतवर युवक सिंह का आहार बन जाते थे। पर क़िस्मतवर लोग सिंह का वध करके उसके वजन के बराबर का सोना जीत जाते थे।

धीरे-धीरे मनोरंजन के ये कार्यक्रम अत्यंत क्रूर, भयानक और असभ्य बनते गये। कभी हाथी और सिंह के बीच लड़ाई का कार्यक्रम रखा जाता...कभी इससे भी भयंकर! मैंने समरसेन को इसकी क्रूरता के बारे में कई बार समझाया! लेकिन मेरी बातों की उपेक्षा कर देते थे, पर वे इसके पूर्व उनके साथ मांत्रिक द्वीप में रहनेवाले नरवाहन मिश्र नामक सैनिक की बातों पर ज़्यादा विश्वास रखते थे।

समरसेन यही जवाब दिया करते थे— "खजाने में धन की कोई कमी नहीं है! राजा तो वृद्ध हो चुके हैं! हमारे देश के लोगों को साहसी व पराक्रमी बनाने की जिम्मेदारी हम पर है! ऐसी हालत में राजा के मनोरंजन के वास्ते ऐसे मनोरंजन के कार्यक्रमों का प्रबंध करने में दोष ही क्या है?"

राजा और राजकर्मचारी इस तरह विलासों में डूबे हुए थे, उधर गाँवों के अन्दर बड़े ही विचित्र परिवर्तन होने लगे। वहाँ पर जो भी शक्तिशाली तथा वाचाल थे, वे सब छोटे-छोटे राजा बन बैठे। कुछ लोग छोटा-सा दल बनाकर पड़ोसी

गाँवों पर क़ब्जा करने लगे। इस तरह एक ही राज्य के भीतर कई छोटे-छोटे राज्य बन गये। जनता के साथ पूर्ण-रूप से अपने संपर्क व संबंध खोने वाले राजा चित्रसेन और उनके कर्मचारी इस हालत से बिलकुल वाकिफ़ न थे। मैंने वहाँ की हालत थोड़ी-बहुत समझ ली, मगर मेरी बातों पर यक़ीन करने वाला कोई न था।

राज्य के भीतर व्यापार और वाणिज्य के साथ खेतीबारी समूल नष्ट हो गई। कुछ लोग विद्रोही बनकर शहर और गाँवों को लूटने लगे। कालांतर में राजा चित्रसेन का शासन सिर्फ़ राजमहल तक सीमित हो गया। राज्य के भीतर कोई ऐसा आदमी न था जो राजा की परवाह करता हो।

एक दिन शाम को राजा चित्रसेन मनोरंजन के कार्यक्रम में मशगूल थे। उस वक़्त एक दूत ने प्रवेश करके राजा के हाथ एक चिट्ठी दी थी। राजा ने उस चिट्ठी को समरसेन के हाथ दिया। उस चिट्ठी को पढ़कर वह दंग रह गया, उसके चेहरे पर काटो तो खून नहीं!

उसने राजा से कहा—"महाराज, कृपया अब आप यह कार्यक्रम देखना बंद करके राजमहल में चलियेगा! आप से शासन संबंधी जरूरी बातें करनी है!"

राजा चित्रसेन मेरी तरफ़ तथा समरसेन की ओर अनिच्छापूर्वक दृष्टि दौड़ाकर वहाँ से चल पड़े। मैं उनसे आज्ञा लेकर जाने को हुआ, तभी समरसेन मुझे रोककर बोला—"शिवदत्त, बहुत ही जरूरी बातों पर विचार करना है, तुम भी हमारे साथ चलो!"

इसके बाद हम तीनों एक गुप्त मंत्रणा के कक्ष में पहुँचे। समरसेन ने दूत से प्राप्त चिट्ठी हमें दिखाते हुए कहा—"आज तक हम लोग आँखें रखते हुए भी अंधे बने रहें। हमारी नज़र बचाकर इस कुंडलिनी द्वीप के अन्दर कई राजा और महाराजा

निकल आये हैं। उनमें से कुछ लोगों ने हमारे पास यह संदेशा भेजा है! उनका कहना है कि वे लोग दुष्ट तथा असमर्थ राजा को हटाना चाहते हैं! उनके इस संदेश का सारांश है कि क़िला उनके हाथ सौंपकर उनकी अधीनता को स्वीकार करे!"

तभी जाकर राजा चित्रसेन का वह नशा उतर गया जिसमें वह आज तक मदहोश था! उन्होंने अपनी आँखें विस्फारित करके समरसेन की ओर इस तरह देखा, जैसे वह नींद की खुमारी से अचानक जाग उठे हो। दूसरे ही पल में जमीन पर लात मारकर कहा–"समरसेन, लगता है कि राज्य का अधिकार थोड़ा-बहुत हमारे हाथों से खिसक गया है। इन घमण्डी लोगों को तुरंत कुचलना होगा! बाकी लोगों को भी सबक़ सिखाने के लिए उन खास सरदारों को पकड़ कर खुले आम उनके सर कटवाना होगा।"

"अच्छी बात है, महाराज! आज्ञा दीजिए।" यों कहकर समरसेन उस कमरे से बाहर चला आया!

मैंने चुपचाप उनका अनुसरण किया। थोड़ी दूर चलने के बाद अचानक समरसेन रुक गया और बोला–"शिवदत्त, इस पत्र के बारे में तुम्हारा क्या विचार है?"

हठात् समरसेन के मुँह से यह सवाल सुन कर मैं भी दंग रह गया। इस संबंध में मैं सिर्फ़ यही जानता था कि देश में अराजकता फैली हुई है और ताक़तवर तथा वाचाल लोग कुछ लोगों को इकट्ठा करके आपस में लड़ रहे हैं, लेकिन जब मुझे यह मालूम हुआ कि आखिर महाराजा का ही सामना कर सकने वाले बलवान भी निकल आये हैं, मेरे आश्चर्य की कोई सीमा न रही। पर मैंने यह बात स्पष्ट रूप से जान ली कि दर असल देश की हालत के बारे में मैं थोड़ी-बहुत जो जानकारी रखता था, उससे भी समरसेन बिलकुल अनभिज्ञ है!"

मैंने कहा—"मुझे ऐसा मालूम होता है कि दुश्मन बड़ा ही ताक़तवर है, ऐसी बात न हो तो वे राजधानी नगर पर अचानक हमला कर बैठते, लेकिन पहले ही सूचना देकर हमला करना चाहता है तो...आप ही इस बात पर गहराई से विचार कीजिए!"

समरसेन पल-दो पल तक मौन रहा। इसके बाद सर हिलाते हुए बोला—"शिवदत्त, तुम्हारी बातों में कुछ हद तक सचाई है! फिर भी हमारे पास सुशिक्षित सेना है! अनुभवी, समर्थ और विश्वासपात्र सेनापति हमारे साथ हैं, इसलिए उन देश-द्रोहियों को कुचलने में हमें ज्यादा समय न लगेगा!"

मुझे संकेत रूप में मालूम हो गया कि समरसेन किसको दृष्टि में रखकर 'विश्वासपात्र नेता' बता रहे हैं! वे लोग समरसेन के साथ जादू के द्वीप में नाना प्रकार की यातनाएँ भोगनेवाले मुट्ठी भर सैनिक थे। उनमें प्रमुख व्यक्ति नरवाहन मिश्र था।

मैंने सुझाया—"तब तो इन देश-द्रोहियों का जितनी जल्दी संहार कर सकें, उतना अच्छा है! आप शीघ्र सेना की तैयारी करवा दीजिए! आप का नेतृत्व कठिन से कठिनतर कार्य को भी साध सकता है।"

समरसेन मेरी तरफ़ आश्चर्य पूर्ण दृष्टि दौड़ाकर बोले—"इस छोटे से कार्य के लिए स्वयं तुम्हारा या मेरा नेतृत्व करना हास्यास्पद लगता है। विश्वासपात्र तथा साहसी नरवाहन मिश्र को मैं यह जिम्मेदारी सौंपना चाहता हूँ।"

मैंने नरवाहन मिश्र के बारे में इसके पूर्व ही चंद बातें सुन रखी थीं, उसका व्यवहार मुझे इधर कई दिनों से संदेह जनक मालूम हो रहा था। लेकिन मुझे लगा कि इस हालत में यह खबर समरसेन को देना हितकर नहीं है। पर साथ ही सेना का नेतृत्व नरवाहन मिश्र के हाथ सौंपना भी खतरे से खाली न था! ऐसी हालत में अब क्या करना होगा?"

(और है।)

मनोरंजन की विद्याएँ

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ पर से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने पूछा–"राजन, पंडित कहा करते हैं कि धारा की गति और राजाओं की चित्त वृत्तियों का पता बताया नहीं जा सकता। बहुत समय से बड़ी श्रद्धा और ईमानदारी के साथ जो मंत्री राजा चतुरसेन की सेवा में लगे हुए थे, वे भी उनके अंतर को समझ नहीं पाये। मैं आप को उसी चतुरसेन की कहानी बताता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनिये।"

बेताल यों सुनाने लगा: गिरिकूट राज्य के शासक महाराजा चतुरसेन के मंत्रियों में लोकनाथ एक था। उसकी पत्नी के रिश्तेदारों में से दो युवक राज दरबार में नौकरी पाने की कोशिश कर रहे थे।

बेताल कथाएँ

तब तक मैं कलाओं के पोषण के बारे में सोचना नहीं चाहता।"

इस पर लोकनाथ ने अपनी समस्या दूसरे मंत्री के सामने रखी। उस मंत्री ने लोकनाथ को यों सलाह दी–"राजाओं की चित्त-वृत्तियाँ बड़ी विचित्र होती हैं। तुम अपने रिश्तेदारों को सुझाओ कि कोई अच्छा मौक़ा देख वे राजा के सामने अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करें। उससे प्रभावित होकर राजा उन्हें अपने दरबार में स्थान देंगे।"

लोकनाथ को यह सुझाव पसंद आया। उस दिन से वह एक अच्छे मौक़े का इंतज़ार करने लगा। एक दिन राजा ने छद्म वेष में लोकनाथ के साथ दूसरे नगर में जाकर वहाँ की हालत की जांच करने का निश्चय किया। यह खबर लोकनाथ को पहले से ही मालूम थी, इसलिए उसने अपने दोनों रिश्तेदारों को समझाया कि अमुक दिन फलाने नगर में राजा से मिलकर अपनी विद्याओं का प्रदर्शन करें।

लेकिन यात्रा के दिन राजा पूर्व निर्णीत नगर को छोड़ दूसरे नगर के लिए चल पड़े। लोकनाथ ने घबरा कर पूछा–"महाराज, हमने तो एक दूसरे नगर में जाने का विचार किया था न?" इस पर राजा हँसकर बोले–"अंतिम क्षण तक मेरे

लोकनाथ की पत्नी अपने पति को बराबर सताने लगी कि वह उन युवकों की सिफ़ारिश करें।

लोकनाथ ने भी अपनी कोशिश में कोई कसर न रखी। उसकी पत्नी के रिश्तेदारों में एक बड़ा अच्छा कवि था और दूसरा एक समर्थ ज्योतिषी था। उन दोनों को दृष्टि में रखकर लोकनाथ ने दो-तीन बार राजा को बताया–"महाराज, हमारे दरबार में प्रतिभाशाली कवि और ज्योतिषियों का होना जरूरी है।"

पर राजा ने जवाब दिया था–"फिलहाल हमारा देश गरीब है! जब तक देश की सारी जनता सुखी न होगी,

कार्यक्रम का पता किसी पर प्रकट नहीं होना चाहिए, यही मेरी पद्धति है ।"

लोकनाथ ने गुप्त रूप से यह खबर अपने एक विश्वासपात्र व्यक्ति के द्वारा घर भेज दी । लेकिन तब तक उसके रिश्तेदार घर से चल पड़े थे ।

लोकनाथ उदास होकर राजा के साथ चल पड़ा । वे एक नगर में पहुँचकर एक गरीब ब्राह्मण के घर ठहर गये । राजा ने उस ब्राह्मण से बातचीत करके नगर के शासन के बारे में कई बातें समझ लीं । सारा दिन नगर की गलियों को छानते राजा और लोकनाथ ने इस बात का परिचय पाया कि जनता राजा के बारे में क्या सोचती है ! यों दो दिन बीत गये । एक दिन वे दोनों जब ब्राह्मण के घर लौटे, तब उन्होंने देखा कि ब्राह्मण किसी का हाथ देख उसका भविष्य बता रहा है ।

राजा ने आश्चर्य में आकर ब्राह्मण से पूछा—"क्या आप ज्योतिष भी जानते हैं ?"

ब्राह्मण बोला—"मैं हाथ की रेखाएँ देख किसी भी व्यक्ति के भूत, वर्तमान और भविष्य बता सकता हूँ ।"

"तब तो मुझे भी बता सकते हैं ?" राजा ने ब्राह्मण की ओर हाथ बढ़ाया ।

ब्राह्मण राजा की हस्त-रेखाओं की जांच करके बोला—"आप तो भाग्यवान हैं;

मगर आपके मन में राजा बनने की आकांक्षा है ! लेकिन आप कभी राजा नहीं बन सकते ! जो कुछ है, उसी से संतुष्ट हो जाइये !"

राजा ने ब्राह्मण की तारीफ़ करके फिर पूछा—"मेरे बारे में और विस्तार के साथ बताइये ।"

ज्योतिषी ब्राह्मण ने राजा के बारे में बहुत सारी गलतियाँ बताईं, फिर भी राजा ने उससे कई सवाल पूछ कर अपना भविष्य जाना । तब राजा ने उससे पूछा—"आप ने यह विद्या कैसे सीख ली ?"

"दर असल मैं कवि हूँ । मेरे पूर्वजों के कई ग्रंथ हमारे घर में पड़े हुए थे; एक

दिन में उन ग्रंथों को उलट-पलट रहा था, तब 'हस्त रेखाएँ' नामक ग्रंथ मेरी नज़र में आया। उस दिन से मैंने भी ज्योतिष बतलाना शुरू किया।"

"अच्छा, आप कवि भी हैं? तो कोई कविता सुनाइये।" राजा बोले।

ब्राह्मण ने स्वयं रचित कविताएँ सुनाईं। साहित्य में ज़्यादा परिचय न रखनेवाले लोकनाथ को भी उसमें कई गलतियाँ नज़र आईं, पर राजा ने उस कविता की बड़ी तारीफ़ की।

इसके बाद वे लोग नगर में दो दिन और रहें। फ़ुरसत के वक़्त ब्राह्मण की कविता सुनते अपना मनोरंजन किया। वहाँ से चलते वक़्त राजा ने ब्राह्मण को एक सौ सोने के सिक्के इनाम देकर कहा—"आप अपनी विद्याओं में और ज़्यादा साधना करेंगे तो आप बड़े कवि और ज्योतिषी बन जायेंगे।"

इस बीच लोकनाथ की पत्नी के द्वारा उसके रिश्तेदारों को सही समाचार मालूम हो गया और वे राजा से मिलने चल पड़े। उन्हें रास्ते में राजा और लोकनाथ की मुलाक़ात हो गई। वे पहले ही जानते थे कि लोकनाथ किस तरह के वेष में देशाटन जानेवाला है। इसलिए उन लोगों ने अपने रिश्तेदार लोकनाथ को पहचाना और उसके साथ रहनेवाले व्यक्ति तो राजा चतुरसेन हैं।

ज्योतिषी ने चतुरसेन का चेहरा देख बताया—"मैं किसी का चेहरा देख किसी भी व्यक्ति की तीन पीढ़ियाँ आगे-पीछे की बात बता सकता हूँ। ये महानुभाव छद्म वेषधारी कोई महाराजा होंगे।"

इस पर कवि बोला—"ओह, ऐसी बात हो तो उस महाराजा के यश की तारीफ़ करते हुए मुझे एक कविता सुनानी पड़ेगी।" इन शब्दों के साथ उसने तत्काल एक कविता सुनाई।

इसके बाद लोकनाथ ने राजा से कहा—"ये लोग असाधारण पंडित मालूम होते

हैं! प्रभू, इन्हें अपने दरबार में बुला लेंगे तो बड़ा अच्छा होगा न ?"

चतुरसेन खीझकर बोले–"इस बात में कोई संदेह नहीं है कि ये लोग बड़े पंडित हैं।" यों कहकर चल पड़े।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा–"राजन, क्या राजा चतुरसेन का व्यवहार कुछ अस्वाभाविक मालूम नहीं होता? नगर में बूढ़े ब्राह्मण की कविता और ज्योतिष सुनकर न केवल राजा प्रसन्न हुए, बल्कि उसे सौ सोने के सिक्के भी इनाम में दे दिये। पर सच्चा ज्योतिष और अच्छी कविता सुनाने वाले पंडितों को अपने दरबार में क्यों नौकरियाँ नहीं दीं? क्या राजा ने पहले ही इस समाचार को जान लिया था कि वे दोनों अपने मंत्री के रिश्तेदार हैं? इस संदेह का समाधान जानकर भी न देंगे तो आप का सर फट जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क बोले–"राजा को यह बात जानने का बिलकुल मौक़ा तक नहीं है कि वे दोनों पंडित मंत्री के रिश्तेदार हैं। मंत्री से राजा ने जो बात कही, इससे स्पष्ट है कि राजा की नज़र में वे दोनों सच्चे पंडित हैं। पर राजा ने कलाओं के पोषण के संबंध में एक बार मंत्री से अपने विचार स्पष्ट बतलाये थे–'हमारा देश ग़रीब है, इसलिए पहले जनता के सुख के लिए उचित प्रबंध करने के बाद ही मैं कलाओं के पोषण के बारे में विचार करूँगा।' राजा जिस ब्राह्मण के घर ठहरे थे, उसकी कविता और ज्योतिष की बात सुनने के बाद कोई भी आसानी से पता लगा सकता है कि वह किसी भी कला में पारंगत नहीं है। पर राजा ने इसलिए उसकी तारीफ़ की थी कि उस नगर में उन्हें अपना मनोरंजन करने के लिए दूसरी जगह कहीं ऐसा मौक़ा नहीं मिला।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुन: पेड पर जा बैठा। (कल्पित)

कैसी हिम्मत ?

एक गाँव में नारायण और शिवराम नामक दो गरीब किसान थे। एक दिन शिवराम हाट में जा रहा था, उस वक्त नारायण ने पूछा–"दोस्त, आप तुम में कौन चीज़ ख़रीदने जा रहे हो ?" इसके जवाब में शिवराम ने बताया कि वह एक गाय ख़रीदने जा रहा है।

इस पर नारायण बोला–"तब तो हम दोनों मेहनत से बच जायेंगे। मैं अपनी गाय बेचने के लिए हाट में जाना चाहता था। मेरे घर आकर गाय को देख लो !"

शिवराम ने सौदा करके तीन सौ रुपये में नारायण की गाय ख़रीदी और अपने घर हांक ले गया। उसी रात को किसी बीमारी की वजह से गाय मर गई। शिवराम ने सारा हाल सुनाकर नारायण से अपने रुपये वापस मांगे। मगर नारायण ने रुपये देने से साफ़ इनकार किया। इस पर शिवराम उसे गाँव के मुखिये के पास ले गया।

मुखिये ने दोनों की बातें सुनकर समझाया–"नारायण, अगर अचानक गाय मर गई है तो इसके पहले ही वह बीमार रही होगी। अपने दोस्त को इस प्रकार धोखा देना तुम्हारे लिए मुनासिब नहीं है। तुम शिवराम के तीन सौ वापस दे दो।"

पर नारायण ने न माना। तब मुखिये ने पल भर सोचकर पूछा–"नारायण, अगर मैं उस गाय को ख़रीद कर नुक़सान उठाता तो तुम क्या करते ?"

"ओह, आप जैसे मुखिये के हाथ उस गाय को बेचसे की मेरी कैसी हिम्मत होती ?" झट नारायण ने कह दिया।

नारायण का धोखा प्रकट हो गया। इस पर मुखिये ने शिवराम को तीन सौ रुपयों के साथ नारायण के द्वारा जुर्माने के रूप में एक सौ रुपये और दिलाये।

तीन चित्रकार

मलय राज्य के राजा केतुवर्मा ने अपने पुत्र जयवर्मा का विवाह करने का निश्चय किया।

मलय राज्य की सीमा पर कर्पूर राज्य था। उस देश की राजकुमारी पुष्पवल्ली बड़ी रूपवती थी। जब जयवर्मा के विवाह की बात उठी, तब उसने अपने पिता को बताया कि वह पुष्पवल्ली के साथ विवाह करना चाहता है।

राजा केतुवर्मा के लिए अपने पुत्र के विवाह की समस्या बड़ी जटिल बन गई; क्योंकि एक जमाने में मलय और कर्पूर राज्यों के बीच भयंकर युद्ध हुए थे।

राजा केतुवर्मा ने इस संबंध में अपने मंत्री की सलाह मांगी। मंत्री ने सुझाव दिया–"महाराज, मलय और कर्पूर राज्यों के बीच युद्ध और दुश्मनी की बात बड़ी पुरानी है। आप बिना संदेह के अपना उद्देश्य पत्र के द्वारा उस राजा को सूचित कीजिये!"

केतुवर्मा ने कर्पूर देश के राजा के नाम पर अपने पुत्र के विवाह की सूचना देते हुए राजकुमारी पुष्पवल्ली का चित्र भेजने को लिखा। कुछ ही दिनों में पुष्पवल्ली का चित्र राजा केतुवर्मा को प्राप्त हुआ। राजकुमारी के सौंदर्य पर युवराजा जयवर्मा ही नहीं, बल्कि उसके साथ अन्य सभी दरबारी लोग भी चकित रह गये। मगर दरबारी पंडितों में से एक ने कहा–"महाराज, इस चित्र को बनाने वाला कर्पूर देश का चित्रकार है! वे लोग चाहे तो कुरूपिनी को भी अत्यंत रूपवती के रूप में चित्रित कर सकते हैं, इसलिए हमारे चित्रकारों को भेजकर उनके द्वारा पुष्पवल्ली के चित्र खिचवाना ज्यादा उचित होगा।"

राजा को पंडित की सलाह पसंद आई, उन्होंने तीन प्रतिभाशाली प्रसिद्ध चित्रकारों को कर्पूर राज्य में भेजा। वे लोग एक हफ़्ते में लौट आये।

तीनों में से एक चित्रकार ने राज परिवारवालों को उसका बनाया हुआ चित्र दिखाया। उसे देख राजा केतुवर्मा के साथ अन्य सभी लोग एकदम आश्चर्य में आ गये। वह चित्र कर्पुर देश के राजा के द्वारा भेजे गये चित्र से कहीं ज्यादा सुदर बन पड़ा था। राजा ने उस चित्रकार को इनाम देकर भेज दिया।

दूसरे चित्रकार ने राजा को अपना चित्र दिखाया। उसमें राजकुमारी अप्सराओं को भी मात करने वाली जैसी लग रही थी। राजा ने उस चित्रकार को पहले चित्रकार से ज्यादा इनाम देकर भेज दिया।

तीसरे चित्रकार को मौन देख राजा ने उससे पूछा–"तुम्हारे द्वारा खींचा गया चित्र कहाँ?"

"महाराज, मुझे क्षमा कीजिएगा। मैंने राजकुमारी का चित्र खींचा तक नहीं है। वह सुंदरता में देवकन्याओं से कहीं बढ़कर है। वह सौंदर्य देखते ही बनता है, पर उसका सही चित्र उतारना बड़े से बड़े चित्रकार के लिए भी संभव नहीं है। यही कारण है कि कर्पूर देश के चित्रकार ने एक प्रकार से, और हमारे राज्य के चित्रकारों ने दूसरे ढंग से चित्रित किया। पर आपने यह विचार नहीं किया कि उनमें से कौन सा चित्र राजकुमारी पुष्पवल्ली का सही प्रतिरूप है।" तीसरे चित्रकार ने जवाब दिया।

राजा ने अपनी भूल को समझ लिया और राजकुमारी का चित्र न खींचने वाले तीसरे चित्रकार का भारी सम्मान किया। इसके बाद दरबारी पंडित के द्वारा कर्पूर देश के राजा के पास इस आशय का पत्र भेजा कि वह अपने पुत्र का विवाह कर्पूर देश की राजकुमारी के साथ करने के लिए तैयार है।
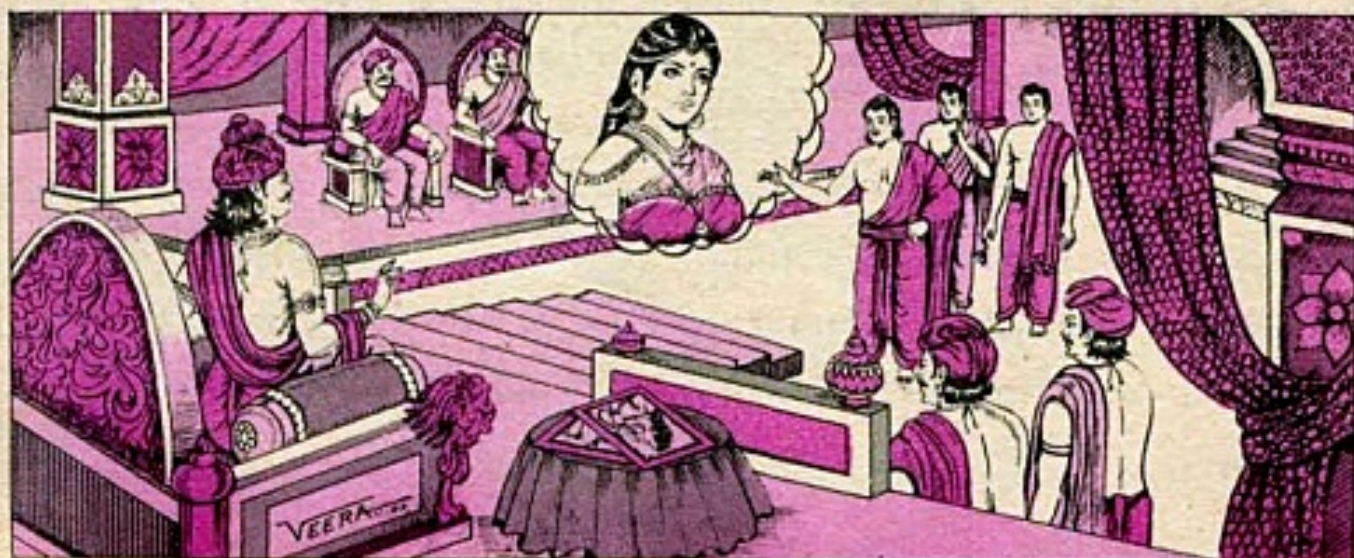
मूर्ख पंडित

चन्द्रगिरि के राजा जयवर्मा कवि और पंडितों का बड़ा ही आदर-सत्कार किया करते थे। साथ ही उनके दरबार में कवि और पंडितों को बड़ी आसानी से प्रवेश मिल जाता था। कवि दिग्गज नाम से विख्यात रुद्र कवि उनके दरबार का प्रधान पंडित था। उसी दरबार में विशाल नामक एक और महा पंडित था, लेकिन वह व्यवहार कुशल न था। अपनी प्रशंसा सुनकर फूले न समाने वाले राजा के यहाँ रुद्र कवि का ज़्यादा बोलबाला था।

रुद्र कवि राजा पर अपने इस प्रभाव का धन कमाने में दुरुपयोग करता था। रुद्र कवि के आश्रय में जो भी व्यक्ति जाता, उसे चार कविताएँ याद कराकर उन्हें राजा के सामने प्रदर्शित करा करके दरबार में नौकरियाँ दिलाता था। इस तरह रुद्र कवि के द्वारा जो लोग राजा से पुरस्कार पाते, वे लोग उसे घूस दिया करते थे।

एक दिन चपल नामक एक व्यक्ति रुद्र कवि के आश्रय में आया। चपल भाषा का ज्ञान बिलकुल न रखता था। फिर भी उसने राजा के दरबार में नौकरी की मांग करते हुए रुद्र कवि को भारी रक़म चुकाने का लोभ दिखाया।

रुद्र कवि ने चपल को चार कविताएँ सुनाकर उन्हें कंठस्थ कराने की कोशिश की। मगर चपल सरल शब्दों का उच्चारण भी सही ढंग से कर न पाया। ऐसा व्यक्ति अगर पंडितों के सामने अपना मुँह खोलेगा तो रुद्र कवि का भेद खुल जायेगा। आखिर सोच-समझ कर रुद्र कवि ने एक योजना बनाई। वह योजना चपल को अच्छी तरह समझाया। उसे बड़ी कड़ाई के साथ चेतावनी भी दी कि

रामनाथ शर्मा

वह किसी भी हालत में दरबार के भीतर अपना मुंह न खोले ।

दूसरे दिन जयवर्मा के दरबार में चपल को साथ लेकर रुद्र कवि पहुँचा । उसने राजा से निवेदन किया—"महाराज, ये एक महान पंडित हैं । वेदों का सार इनके लिए करतलामलक है । ये अपने पांडित्य का परिचय सिर्फ़ हाथ और सर की चेष्टाओं के द्वारा देते हैं ।"

राजा ने प्रसन्न होकर कहा—"तब तो मैं इनके पांडित्य का ज़रूर परिचय पाना चाहूँगा ।"

इस पर रुद्र कवि ने चपल से पूछा—"महानुभाव, आप मेरे एक संदेह का समाधान दीजिए! इस जगत के मूलकारक कौन हैं?"

चपल ने जरा भी संकोच न किया । आकाश की ओर हाथ उठाकर जाज्वल्यमान सूर्य बिंब का अभिनयपूर्वक परिचय दिया ।

रुद्र कवि ने राजा से निवेदन किया—"प्रभू, ये न केवल महान पंडित हैं, बल्कि बड़े दार्शनिक भी हैं । मेरे सवाल का कोई भी पंडित तुरंत यही जवाब देगा कि ईश्वर ही इस जगत के मूलकारक हैं, लेकिन ये सूर्य भगवान बता रहे हैं । सूर्य के बिना प्राणियों का अस्तित्व नहीं है, बरसात भी न होगी ।"

राजा ने 'शबाश!' कहकर सर चालन किया । इसके बाद रुद्र कवि ने चपल से दूसरा सवाल किया—"महानुभाव, यह

बताइये कि हमारे शरीर का प्रमुख अंग क्या है ?"

चपल ने तुरंत नाक दिखाई।

रुद्र कवि खुश होकर बोला–"महाराज, हमारे पूर्वजों ने आँख को शरीर के अवयवों में प्रधान बताया। लेकिन ये नाक को प्रधान बताते हैं। इसके पीछे एक सत्य छिपा हुआ है। हम लोग आँख के बिना जी सकते हैं, लेकिन सांस लेने के लिए नाक न हो तो कुछ ही क्षणों में हमारा अंत हो जाएगा।"

राजा ने आनंदपूर्वक सर हिलाया। इसके बाद रुद्र कवि ने चपल से पूछा–"कवि और राजा–इन दोनों में कौन महान है ?"

चपल ने पहले हाथ उठाकर रुद्र कवि को दिखाया, फिर राजा की ओर संकेत करके अस्वीकार सूचक सर हिलाया, फिर पहले राजा तथा बाद को रुद्र कवि को दिखाकर स्वीकृति सूचक सर हिलाया।

चपल के संकेतों का अर्थ दरबारियों ने यह लगाया कि महाराजा से रुद्र कवि महान है। राजा को भी यह विचित्र और अपमानजनक लगा।

हालात के नाज़ुक होने देख रुद्र कवि ने उन संकेतों का अर्थ यों समझाया–"महाराज, ये वेदांत परक दृष्टि से जवाब दे रहे हैं, ऊपर से इसका अर्थ कुछ और लगे, पर पैनी दृष्टि से विचार करने पर इसका रहस्य खुल जाता है। इन्होंने
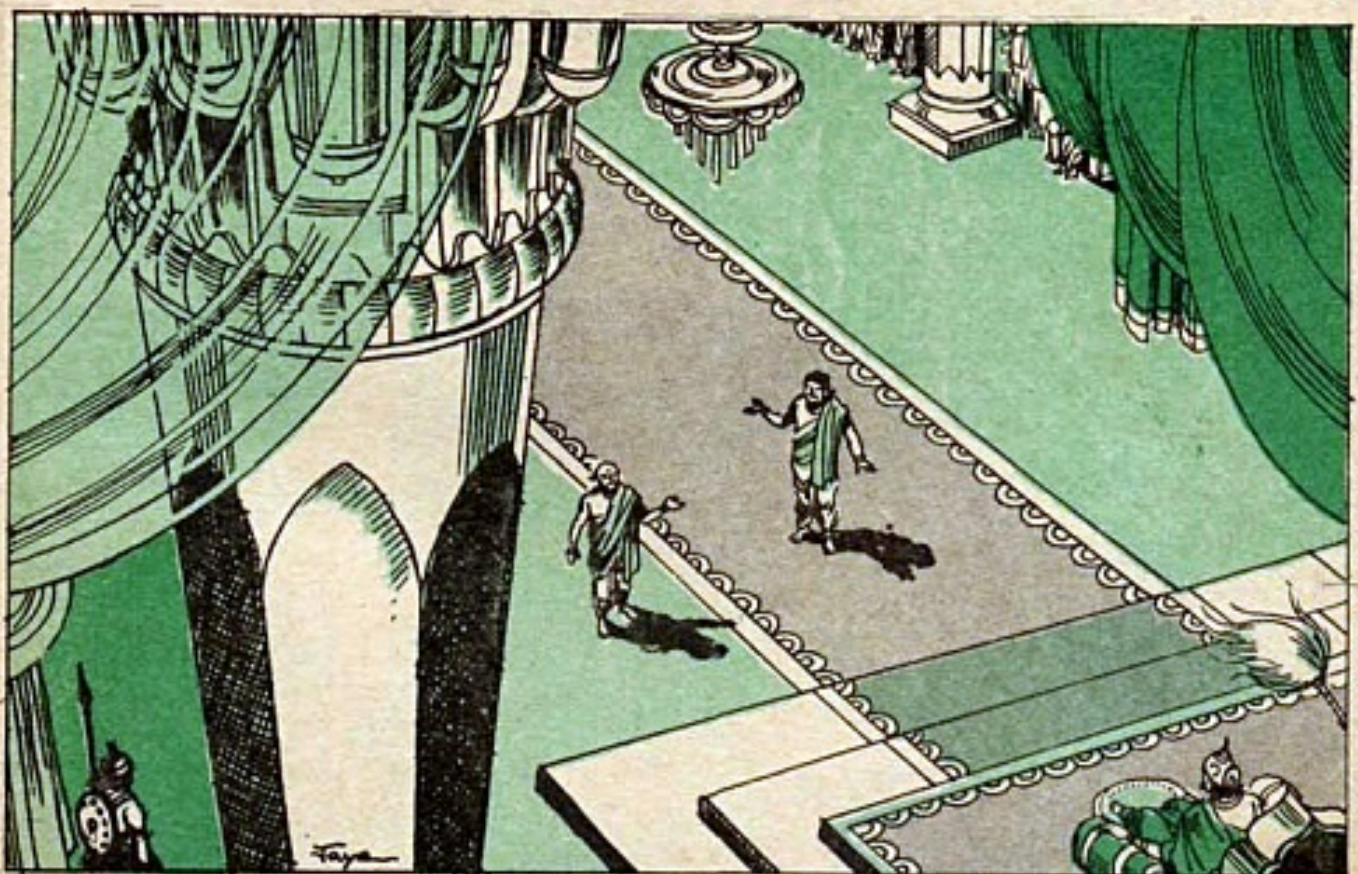
पहले मेरी तरफ़ इशारा करके फिर आप की ओर संकेत किया है। इसका मतलब है–कवि राजा। लेकिन इन दोनों में कौन बड़ा है, यह सवाल उठता है–इसका उत्तर उन्होंने पहले आपको दिखाकर फिर मेरी तरफ़ संकेत किया है। इसका तात्पर्य है–यदि कविराज मैं हूं तो आप राज कवि हैं। याने कवि से राजा ही महान हैं, यही इनका भाष्य है!"

इस पर राजा जयवर्मा खुशी से फूले न समाये, सिंहासन से उठकर चले आये, अपने कंठ मे शोभित रत्नहार चपल को भेंट करके बोले–"महापंडित, आप की विद्वत्ता तथा अर्थ पूर्ण उत्तरों ने मुझे आनंद पहुंचाया। मैं आपको इसी वक़्त अपने दरबारी पंडित नियुक्त करता हूं।"

इतने में विशाल नामक विद्वान ने उठ कर निवेदन किया–"महा पंडितजी के सामने मे अपने छोटे से संदेह का निवारण करना चाहता हूं। मेरे विचार से इस जगत के मूल कारक माता-पिता हैं। उनके बिना आप भी नहीं, हम भी नहीं हैं। इसलिए जगत का आधार मैं... है न?" इस पर चकित हो चपल रुद्र कवि की ओर देखता ही रह गया।

इस पर विशाल झट बोल उठा–"ओह, क्या आप जैसे महान पंडित का गूंगे हो जाना सरस्वती देवी का दुर्भाग्य है!"

चपल उत्तेजित हो चिल्ला उठा–"मैं कोई गूंगा नहीं हूं! क्या तुम महानुभाव रुद्र कवि से कहीं बड़े मर्द हो?"

ये बातें सुनने पर राजा के साथ सभी दरबारी भांप गये कि चपल का भाषा-ज्ञान कहां तक है? वे समझ गये कि उसने जो समाधान दिये हैं, वे सब रुद्र कवि के द्वारा उसके दिमाग में बिठाये गये हैं।

इस पर राजा बिगड़ उठे, दर्याफ़्त करने पर रुद्र कवि की घूसखोरी का पता चल गया। तब उन्होंने रुद्र कवि को दरबार से निकाल दिया और सच्चे व महान पंडित-विशाल को अपने प्रधान पंडित के रूप में नियुक्त किया।

विश्वासघात

ब्रह्मदत्त जिन दिनों काशी राज्य पर शासन कर रहे थे, उन दिनों में बोधिसत्व उनके यहाँ पंडितामात्य के पद पर थे ।

एक बार काशी के राजा ब्रह्मदत्त ने किसी कारण से अपने पुत्र पर नाराज होकर उसे अपने देश से निकाल दिया । राजकुमार अपनी पत्नी के साथ बहुत दिन इधर-उधर भटकता रहा और काफी यातनाएँ झेलीं । उन्हें रहने के लिए न निवास था और खाने के लिए खाना, फिर भी अपने पति के कष्टों को देख उसकी महा साध्वी पत्नी ने बड़ी सहनशीलता के साथ सारी यातनाएँ झेलीं ।

कुछ साल बाद ब्रह्मदत्त की मौत हुई । अपने पिता की मौत का समाचार मिलते ही राजकुमार बड़ा खुश हुआ । काशी में पहुँचकर गद्दी पर बैठने के उतावले में वह तेजी के साथ यात्रा करने लगा ।

पर उस मूर्ख की समझ में यह बात न आई कि उसकी पत्नी उसके बराबर तेजी के साथ चल नहीं सकती और उसके कष्टों में पत्नी ने भी समान रूप में भाग लिया है, इसलिए इस वक़्त उसकी तक़लीफ़ों में भी राजकुमार को हिस्सा लेना है! इस कारण राजकुमार ने दिन-रात खाना-पीना व आराम करना, इत्यादि का ख्याल तक किये बिना अपनी पत्नी को भी तेजी के साथ चलने को बाध्य किया ।

चाहे जैसी भी तीव्र राज्याकांक्षा क्यों न रखते हो, खाना व आराम के बिना आखिर कितनी दूर चल सकता है । इसलिए उसकी पत्नी के साथ उसे भी जोर की भूख लगी । भूख-प्यास सहते दोनों आखिर एक गाँव में पहुँचे । वहाँ पर कुछ लोगों ने उनकी यह बुरी हालत देख कर कहा—"महाशय, लगता है कि आप

लोग बड़ी भूख के साथ ही यात्रा कर रहे हैं। हम लोग थोड़ा खाना देते हैं, पोटली बनाकर ले जाइए और कहीं रास्ते में खा लीजिएगा!"

राजकुमार ने अपनी पत्नी को एक जगह आराम करने को कहा और खाना लाने वह उनके पीछे चल पड़ा। उन लोगों ने पति-पत्नी के भर पेट खाने लायक़ खाना पत्तलों में बांधकर राजकुमार के हाथ दिया।

खाना लेकर लौटते वक़्त राजकुमार ने सोचा—"यह खाना दोनों मिलकर खा लेंगे तो दूसरे जून ही फिर भूख लगेगी। न मालूम फिर कब खाना हाथ लगेगा! उन्हें तो बहुत दूर की यात्रा करनी है! शीघ्र यात्रा करने में पत्नी रोड़ा बनी हुई है। काशी तक पहुँचना उसकी पत्नी के लिए नहीं, उसे अनिवार्य है! इसलिए कोई उपाय करके सारा खाना उसीको खा डालना है!"

उस नीच ने यों विचार करके पत्नी के पास पहुँचते ही समझाया—"तुम आगे चलती चलो, मैं कालकृत्यों से निवृत्त होकर जल्दी आता हूँ।"

राजकुमार की पत्नी ने उसकी बातों को सच माना। वह ज्यों ही आगे बढ़ी, राजकुमार ने सारा खाना खा डाला, पत्तों को ढीला बांधकर जल्दी-जल्दी डग भरते पत्नी से आ मिला।

पत्नी ने आस भरी आँखों से ज्यों ही पोटली की ओर देखा, त्यों ही उसने क्रोध का अभिनय करते कहा—"देखो, इस गाँव के लोग कैसे दगबाज हैं। खाने के नाम पर खाली पत्तल पोटली बनाकर दिये हैं!"

राजकुमार की पत्नी सच्ची बात जान गई थी, फिर भी अपने पति का आदर करती थी, इस वजह से वह चुप रह गई। थोड़े दिन की यात्रा करके वे लोग आखिर काशी पहुँच गये। ब्रह्मदत्त के पुत्र ने अपना राज्याभिषेक सही ढंग से करवा लिया और वह काशी का राजा बन बैठा।

राजा बनने के बाद वह अपनी पत्नी के बारे में सोचने व समझने की आदत तक खो बैठा। उसके दिमाग में यह बात न सूझी कि अपने कष्टों को समान रूप से बांटने वाली पत्नी को अपने सुखों में भी हिस्सा देना है! कभी राजा ने इस बात की पूछ-ताछ न की कि उसकी पत्नी सही ढंग से खाना खाती है या नहीं और उसे रानी के योग्य साबित कपड़े मिल जाते हैं या नहीं! इसलिए रानी की तक़लीफ़ें दूर होने के बावजूद भी वह हमेशा चिंतित रहने लगी।

राजा के यहाँ पंडितामात्य के पद पर रहनेवाले बोधिसत्व ने रानी की चिंता को भांप लिया और एक बार उनसे मिलने गये। रानी ने उनका स्वागत करके आतिथ्य दिया।

बोधिसत्व ने कहा–"महारानीजी, अपने कष्टों से मुक्त हो राजा बनने के उपलक्ष्य में राजा ने मुझे कई भेंट-उपहार दिये हैं, लेकिन आपने आज तक मुझे एक भी चीज़ नहीं दी।"

"महानुभाव, मैं नाम के वास्ते रानी हूँ, मगर सच पूछा जाय तो मेरे और अंत:पुर की दासियों के बीच कोई फ़र्क नहीं है। आप ही बताइये कि राजा की तक़लीफ़ों को छोड़, सुख-भोगों में जो हिस्सा नहीं रखती, वह आखिर कैसी रानी कहलायेगी?" इन शब्दों के साथ रानी ने वह सारा किस्सा सुनाया, जब काशी लौटने के रास्ते में उसके पति ने कैसे अपने हिस्से का भी खाना खा डाला था! फिर बोली–"इस समय भी मेरे पति इस बात की पूछ-ताछ नहीं करते कि मैं अच्छा भोजन कर रही हूँ या नहीं, अच्छे कपड़े पहनती हूँ या नहीं?" यों कहते रानी की आँखें गीली हो गईं।

बोधिसत्व ने रानी को समझाया–"महारानीजी, आप चिंता न करें। यह बात मैं स्वयं आपके मुँह से जानने के लिए ही आया हूँ। मैं कल भरी सभा में

आप से ये ही सवाल पूछूंगा, आप निर्भय होकर ये ही जवाब दें तो मैं आपकी चिंता को दूर कर सकता हूं।"

दूसरे दिन राज सभा में महारानी भी आ पहुँचीं, इस पर बोधिसत्व ने उनसे पूछा—"महारानीजी, आप राज्य ग्रहण के बाद अपने सेवकों की बात सोचती तक नहीं!" इस पर रानी ने सभा में सारी बातें बताईं। यह बात सभा में प्रकट होते ही कि राजा ने एक बार रानी के हिस्से का भी खाना खा लिया था; राजा ने सभा में अपमान का अनुभव किया।

रानी की बातें समाप्त होते ही बोधिसत्व ने समझाया—"महारानीजी, जब महाराजा आपका ख्याल तक नहीं रखते, तब आप को भी उनके साथ रहने की कोई जरूरत नही है। कहा गया है—

चजे चजंतं वन्थं न कइरा,
आपेत चित्तेन न संभजेय्य;
द्विजो दुमं खीण फलंति इत्वा;
अंडं समेक्खेय्य, महाहे लोके।

[जिसने तुम्हें त्याग दिया, उसे त्याग दो। ऐसे आदमी के स्नेह की कामना न करो। जो तुम्हारे प्रति आदर नहीं रखता, तुम्हें उसके प्रति आदर दिखाने की ज़रूरत नहीं है। पक्षी भी आखिर फल विहीन पेड़ को छोड़ दूसरे वृक्षों में चला जाता है। यह जगत बड़ा ही विशाल है।]

इसलिए आप इस राजमहल को छोड़ इस विशाल जगत में चली जाइये, जहाँ आप को आदर मिलता है, वहीं पर आप सुख का जीवन बिताइये।"

ये शब्द सुनने की देर थी कि राजा सिंहासन से उतर आये, बोधिसत्व के पैरों पर गिरकर क्षमा मांगने लगे—"पंडितामात्य, आप मेरे अपराध को क्षमा कर लीजिएगा! मेरी इज्ज़त बचाइये, जो बात हो गई, सो हो गई। आइंदा मैं अपनी पत्नी के प्रति धर्मपूर्ण व्यवहार करूँगा।"

उस दिन से राजा रानी के प्रति आदर दिखाते हुए सुख की जिंदगी जीने लगा।
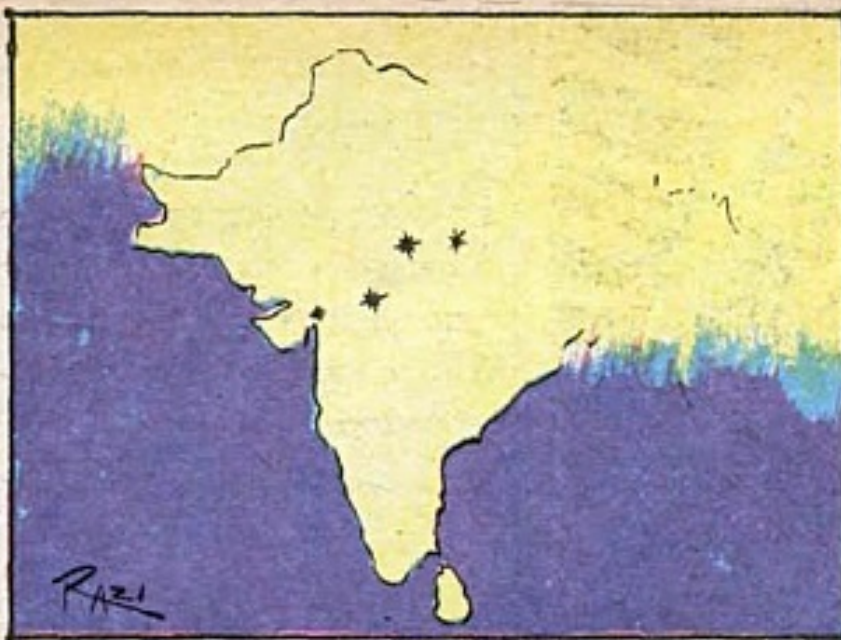
पृथ्वीराज – संयोगिता - १

ग्यारहवीं सदी में उत्तर भारत पर चार प्रमुख हिन्दू परिवार शासन करते थे। उनके राजधानी नगर दिल्ली, गुजरात, अजमेर और कनौज सांस्कृतिक और व्यापारिक दृष्टि से भी उच्च दशा में थे।

प्रतिभाशाली युवक पृथ्वीराज दिल्ली के शासक थे। अजमेर के राजा उनके मातामह थे। इसलिए उन्होंने अपने राज्य के लिए पृथ्वीराज को वारिस बनाकर मृत्यु के समय उन्हें हृदयपूर्वक आशीर्वाद दिया।

कनौज के राजा जयचन्द्र उनके बहनोई थे। उनके मन में अजमेर राज्य को हस्तगत करने की कामना थी। लेकिन वे जानते थे कि पृथ्वीराज महान वीर हैं, इसलिए वे डर के मारे चुप रह गये।

बड़े वैभवपूर्वक पृथ्वीराज का राज्याभिषेक हुआ। इस समय वे विशाल राज्य दिल्ली और अजमेर के राजा थे। वे बड़ी समर्थता के साथ शासन कार्य संभालने लगे।

अफ़गानिस्तान के गोरी प्रदेश का शासक गोरी महम्मद दिल्ली पर क़ब्जा करने की सोच रहा था। उसने छे बार दिल्ली पर हमला किया और हर बार पृथ्वीराज के हाथों में बुरी तरह से हार गया। गोरी का सामना करने में जयचंद्र को छोड़ बाक़ी सभी राजाओं ने पृथ्वीराज की मदद की।

एक बार गोरी महम्मद पृथ्वीराज के हाथों में बन्दी हुआ, तब सेनापतियों में से कुछ लोगों ने सोचा कि गोरी को औरत के भेष में पालकी में वापस भेज देना चाहिए। इस तरह गोरी महम्मद बुरी तरह से अपमानित हुआ।

मगर पृथ्वीराज ने उसे छुड़ाकर चेतावनी दी कि आइंदा वह भारत पर हमला करने की भूल न कर बैठे। अपने जानी दुश्मन को प्राणों के साथ छोड़ने के उपलक्ष्य में गोरी ने पृथ्वीराज के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

कनौज के राजा जयचन्द्र के संयोगिता नामक एक पुत्री थी। वह न केवल बड़ी सुंदर थी, बल्कि विदुषी भी थीं। इस वजह से देश के सारे राज परिवार उसकी जानकारी रखते थे।

जयचन्द्र ने संयोगिता के स्वयंवर की घोषणा की। उन्होंने पृथ्वीराज को छोड़ बाक़ी सब विवाह योग्य राजकुमारों के पास निमंत्रण भेजे। बहुत समय पहले पृथ्वीराज ने संयोगिता को अजमेर के राजमहल में देखा था। उस दिन से पृथ्वीराज संयोगिता को भूल न पाये।

संयोगिता के स्वयंवर के जब सारे इंतजाम हो गये, तब सीमा पर अचानक युद्ध का ख़तरा पैदा हुआ। कुछ राजकुमारों के अनुरोध पर जयचन्द्र ने संयोगिता का स्वयंवर स्थगित किया। इसकी सूचना नगर वासियों को ढिंढोरा के द्वारा तुरंत दे दी गई।

जयचन्द्र ने पृथ्वीराज को स्वयंवर में निमंत्रित नहीं किया, इस पर उन्हें जयचन्द्र पर बड़ा क्रोध आया। उन्होंने अपनी बूढ़ी दासी से संयोगिता के प्रति अपने प्रेम का परिचय दिया।
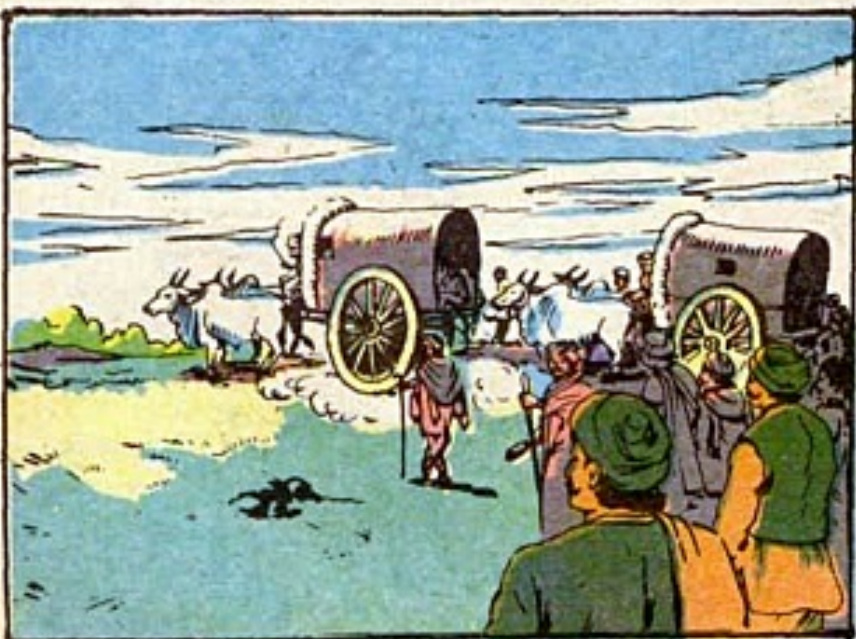
दासी ने पृथ्वीराज को वचन दिया कि वह पृथ्वीराज के प्रति संयोगिता के मन में आदर व प्रेम भाव पैदा करने में मदद देगी। उस समय व्यापारियों का एक दल अजमेर जा रहा था। बूढ़ी दासी उसी दल के साथ चल पड़ी।

(और है।)
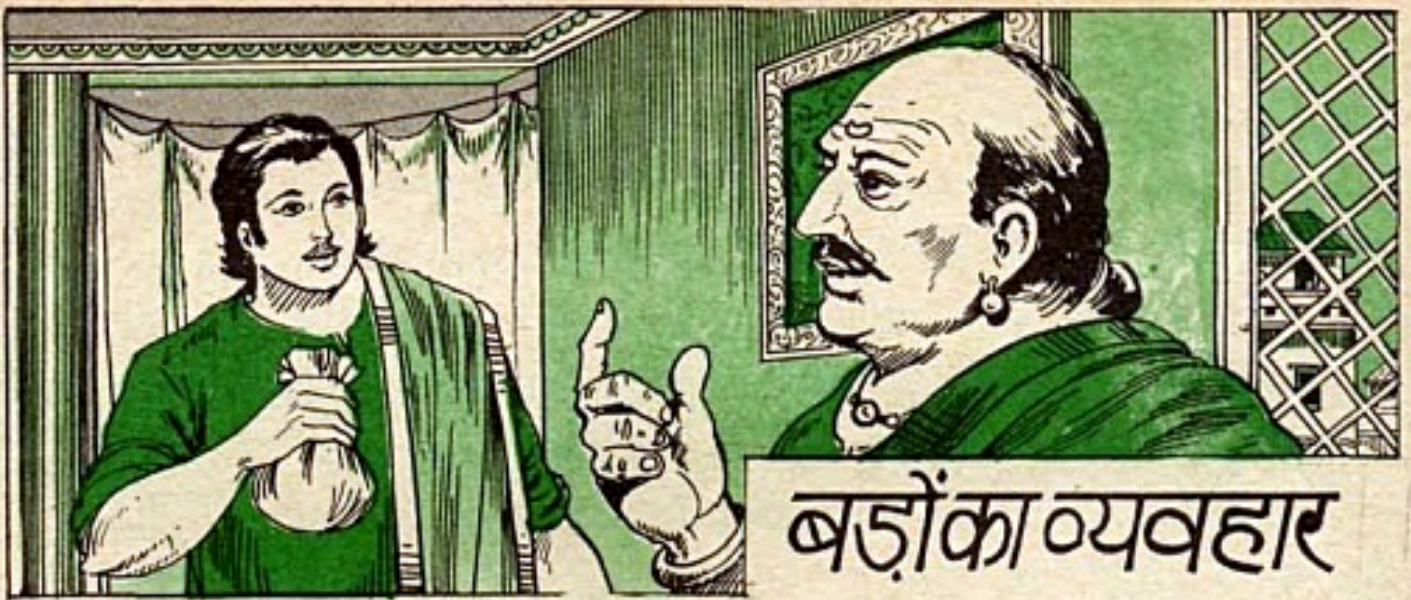
बड़ों का व्यवहार

चन्द्रनाथ जब पच्चीस साल का था, तब उसके पिता का देहांत हो गया। मरते वक़्त वह अपने पीछे दो एकड़ जमीन, एक मकान और तीस हज़ार रुपये नक़द छोड़ गया। चन्द्रनाथ ने सोचा कि इतनी रक़म घर में रखे तो नाहक़ खर्च हो जाएगा। इसलिए उसने महाजनी करने का निश्चय किया।

यह समाचार मिलने पर उस गाँव के मशहूर वैद्य गंगानाथ झा ने चन्द्रनाथ को अपने घर बुला भेजा और कहा–"चन्द्रनाथ! यह पुराना मकान मरीजों के लिए काफी नहीं है, इसलिए मैं एक अस्पताल बनाना चाहता हूँ। मुझे दस हज़ार रुपये कर्ज़ में दे दो, मैं तुम्हें हर महीने ब्याज़ चुकाते जाऊँगा। जब मेरे पास काफ़ी रक़म जमा हो जाएगी, तब एक साथ तुम्हारा कर्ज़ चुकाऊँगा।"

वैद्य के रूप में गंगानाथ की बड़ी अच्छी आमदनी है। इसलिए चन्द्रनाथ ने सोचा कि उसके रुपयों की सुरक्षा होगी, यों सोच कर उसने गंगानाथ को दस हज़ार रुपये उधार देकर ऋण-पत्र लिखवाया।

इसके दस दिन बाद गाँव के बुज़ुर्गों में से एक व्यवहार कुशल सोमनाथ ने चन्द्रनाथ को बुला भेजा और कहा–"तुम जानते हो कि लोगों के बीच मेरा कैसे साख है! इधर मैंने अपनी बेटी की शादी की, तब से मेरे पास रुपयों की तंगी आ गई! अगर मुझे सिर्फ़ पांच हज़ार रुपये उधार दे दोगे तो हर महीने मैं तुम्हें उसका ब्याज दूंगा और बहुत जल्द पांच हज़ार रुपये भी चुका दूंगा!"

इस पर चन्द्रनाथ ने सोमनाथ को पांच हज़ार रुपये कर्ज़ देकर ऋण-पत्र लिखवाया।

सरला यादव

इसके एक हफ़्ता बाद गाँव का सबसे बड़ा किसान मंगलनाथ खुद चन्द्रनाथ के घर आ पहुँचा और बोला—"चन्द्रनाथ, यह सोचकर अचरज में मत आओ कि इतनी सारी जमीन-जायदाद वाला व्यक्ति कर्ज़ माँगने आया है, मैं कुछ और खेत खरीद रहा हूँ। सिर्फ़ मुझे पाँच हज़ार रुपये की कमी आ गई है। वक़्त पर मेरी मदद दोगे तो हर महीने में उसका ब्याज चुकाता जाऊँगा और बाकी रक़म बहुत जल्द तुम्हारे हाथ सौंप दूँगा।"

चन्द्रनाथ ने मंगलनाथ को भी पांच हज़ार देकर ऋण-पत्र लिखवाया। छे महीने बीत गये। हर महीने उसे तीनों सज्जनों से बराबर ब्याज मिलता रहा, इस पर चन्द्रनाथ ने सोचा कि ब्याज का व्यापार शुरू करके उसने अच्छा किया।

छे महीने और बीत गये। तीनों कर्ज़दार हर महीने ब्याज वक़्त पर भेजते न थे, उल्टे दो-तीन महीने बाद एकाध महीने का ब्याज भिजवाने लगे। अब चन्द्रनाथ के पास उसके पिता की संपत्ति सिर्फ़ दस हज़ार रुपये बच रही। इस बीच वह महाजनी की मुसीबतों से अच्छी तरह से वाक़िफ़ हो गया था। इसलिए उसने पांच हज़ार में दो एकड़ जमीन खरीदी, उसमें खेती करने के लिए उसे तीन हज़ार और खर्च करने पड़े। ब्याज भी वक़्त पर मिलता न था, इसलिए घर के खर्च के लिए उसे बचे हुए दो हज़ार रुपयों में एक हज़ार

खर्च करना पड़ा। अब नक़द के रूप में उसके पास सिर्फ़ एक हजार रुपये बच रहें।

इस हालत को देख चन्द्रनाथ चिंता में पड़ गया और अपने कर्ज़दारों के पास जाकर गिड़-गिड़ा कर पूछा—"आप लोग हर महीने मुझे ब्याज भले ही न दे, कम से कम उधार लिये गये वह मूल धन तो दे दीजिए।"

वैद्य गंगानाथ ने समझाया—"अरे भाई, मैं हर हालत में अपने घर का सोना बेच देना चाहता हूँ, तुम्हारा कर्ज जल्द ही चुका दूंगा।"

गाँव के बुज़ुर्ग सोमनाथ ने लापरवाही से उत्तर दिया—"मैं अपने दादा-परदादाओं का मकान जो रामपुर में है, बेच देना चाहता हूँ। उसकी बिक्री होने पर तुम्हारा पूरा ऋण चुका दूंगा।"

मंगलनाथ ने कहा—"मैं अपने दूर के खेत बेचने जा रहा हूँ। ब्याज सहित तुम्हारी पूरी रक़म चुका दूंगा।"

इसके बाद पूरा एक महीना बीत गया। पर उन तीनों कर्ज़दारों से ब्याज की रक़म तक न मिली, इस पर चन्द्रनाथ ने गाँववालों को यह समाचार सुनाकर उनकी मदद मांगी।

पर गाँव के कुछ लोगों को वैद्य के विरुद्ध कुछ कहने की हिम्मत न पड़ी। कुछ लोग गाँव के बड़े बुज़ुर्ग की मदद पर निर्भर थे। बाकी लोग बड़े किसान से डरते थे। इसलिए उन लोगों ने चन्द्रनाथ
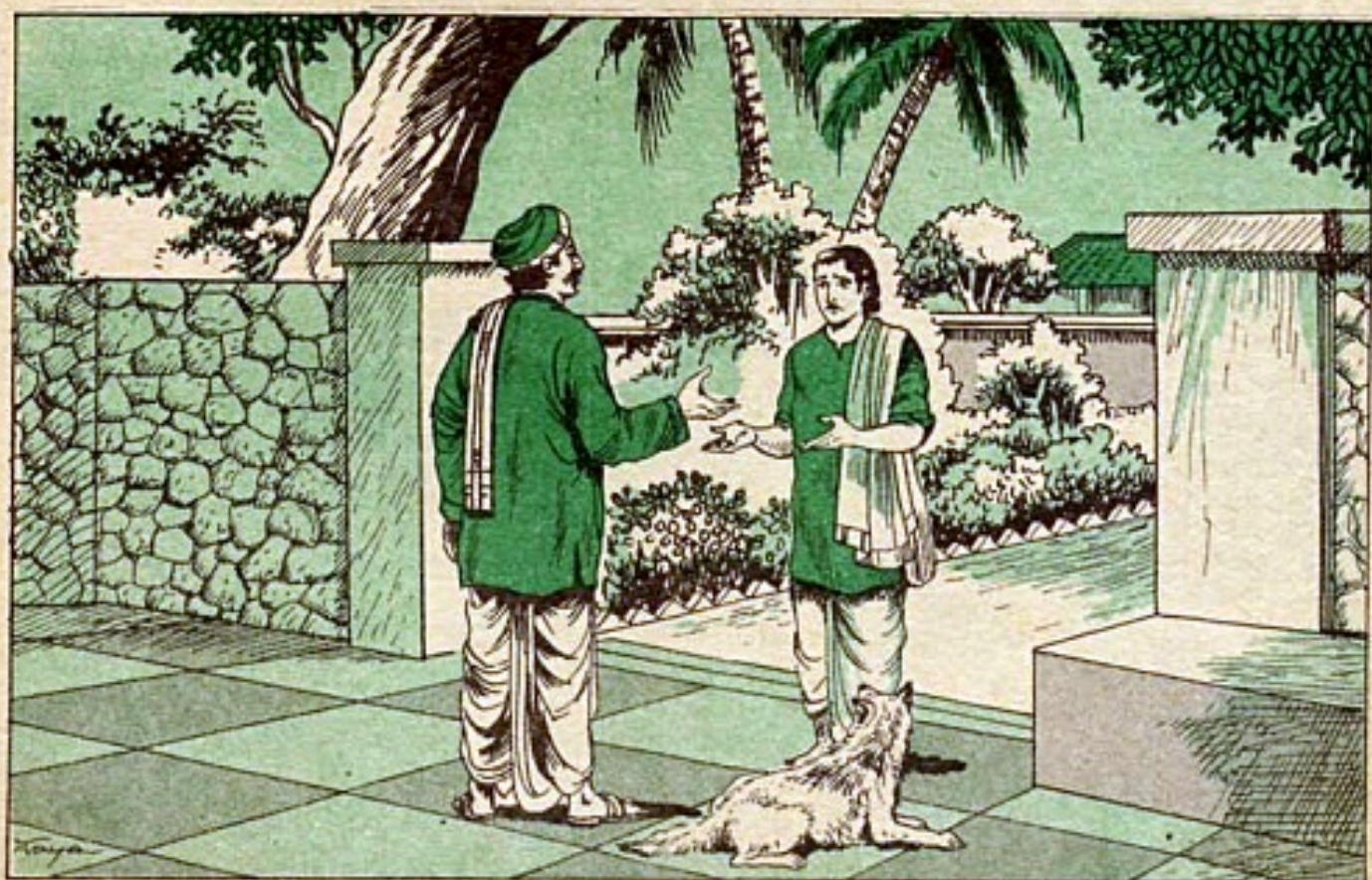
को समझाया–"बड़े लोगों के व्यवहार कुछ ऐसे ही होते हैं। इसमें हम तुम्हारी क्या मदद दे सकते हैं?"

इसके एक हफ़्ते बाद गाँव वालों ने देखा कि एक दिन सवेरे चन्द्रनाथ की पत्नी और उसकी बूढ़ी माँ देहली पर बैठे रो रही हैं, इस पर गाँव के बहुत सारे लोग वहाँ पर इकट्ठे हो गये। उनमें से एक ने चन्द्रनाथ की पत्नी के हाथ का कागज़ लेकर पढ़ा। उसमें यों लिखा था– "मैंने ब्याज के लोभ में पड़कर अमुक-अमुक लोगों को भारी रक़में कर्ज़ में दे दी है। ऐसा लगता है कि ब्याज की बात दूर, मूल धन के भी मिलने की संभावना नहीं है! मेरे पास जो थोड़ी-सी रक़म बची थी, उससे मैं अपने खेतों में फसल पैदा न कर पाया, इससे मैं ज़िन्दगी से ऊब कर साधुओं की जमात में मिलने जा रहा हूँ।"

जब वहाँ पर जमा हुए लोगों को यह बात मालूम हो गई कि चन्द्रनाथ का सन्यासी बनने के पीछे मूल जिम्मेदार गाँव के वैद्य, बुजुर्ग और सबसे बड़े किसान हैं, तब सबने उनकी खुले आम निंदा करना शुरू किया।

चन्द मिनटों में यह खबर उन तीनों को मालूम हो गई। वे लोग गाँव के लोगों के बीच अपनी इज्जत बचाने के ख्याल से उसी दिन शाम को चन्द्रनाथ के घर आये, ब्याज सहित मूल धन चुकाकर अपने ऋण-पत्र ले गये।

इसके एक सप्ताह बाद चन्द्रनाथ मैले-कपड़ों व दाढ़ी-मूँछें बढ़ाये हुए घर लौट आया। इस पर गाँव के कुछ लोग उसके पास पहुँचकर सन्यासी बन जाने पर उसे झिड़कियाँ सुनाने लगे, तब उसने गाँववालों से बताया–"भाइयों, मैं कर ही क्या सकता था? आप ही लोग बताइये! ईश्वर ने मेरे सन्यासी बनने के बाद ही हमारे गाँव के बुजुर्गों के दिलों में ऋण चुकाने की सद्भावना पैदा की!" यों कहकर वह परिहास पूर्वक मुस्कुरा उठा।

राजा का उत्तर

विमल नामक सेनापति ने राजा से प्रार्थना करके अपने पुत्र और दामाद को दरबार में नौकरियाँ दिलाई। इस पर कुछ लोगों ने गुप्त रूप से जहाँ-तहाँ शिकायत की कि राजा के द्वारा एक परिवार के दो लोगों को इस तरह नौकरियाँ देना मुनासिब नहीं है।

यह ख़बर राजा के कानों में पड़ी। कुछ दिन बाद विमल एक और युवक को राजा के पास ले जाकर बोला-"महाराज, यह मेरा भानजा है। इसका नाम आनंद है। इसके पर दादा अवंती के युद्ध में, इसका दादा कलिंग के युद्ध में और इसके पिता महाराष्ट्र के युद्ध में क्रमशः आपके पर दादा, दादा और पिताजी की सेवाएँ करके वीर स्वर्ग को प्राप्त हुए हैं। अब आप की पीढ़ी में भी..." यों कहते सकुचाने लगा।

राजा ने बात ताड़ ली, और इतमीनान से बोले-"यह बात जानकर मुझे बड़ी खुशी हुई कि इस युवक के पुरखे तीन पीढ़ियों से हमारी सेवाएँ करके स्वर्ग सिधारे हैं; लेकिन ऐसा मौक़ा मेरी पीढ़ी में नये लोगों को देना ज्यादा उचित होगा न?"

इस तरह विमल का मुँह बंद हो गया, फिर इसके बाद उसने राजा के पास जाकर किसी की सिफ़ारिश करने की हिम्मत न की।
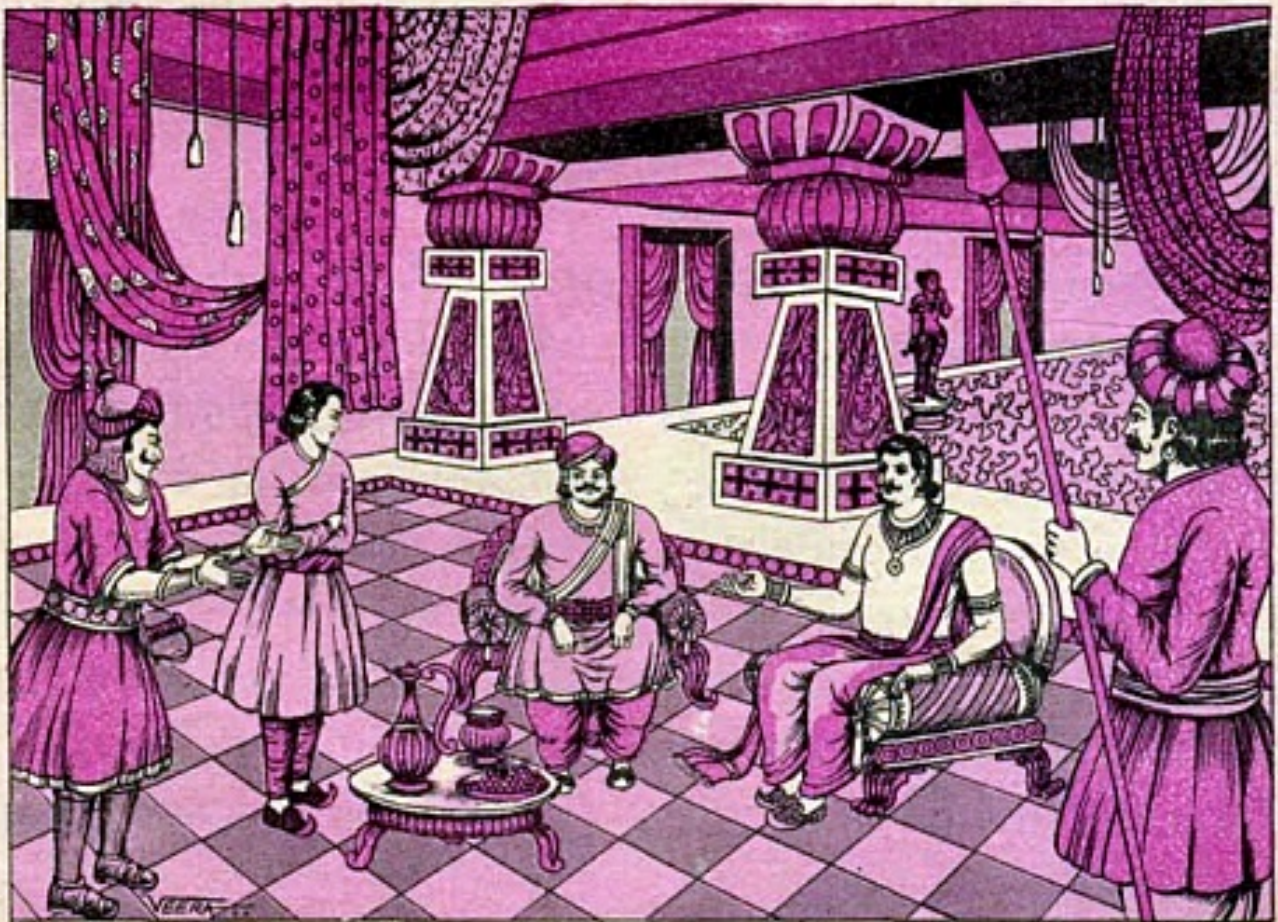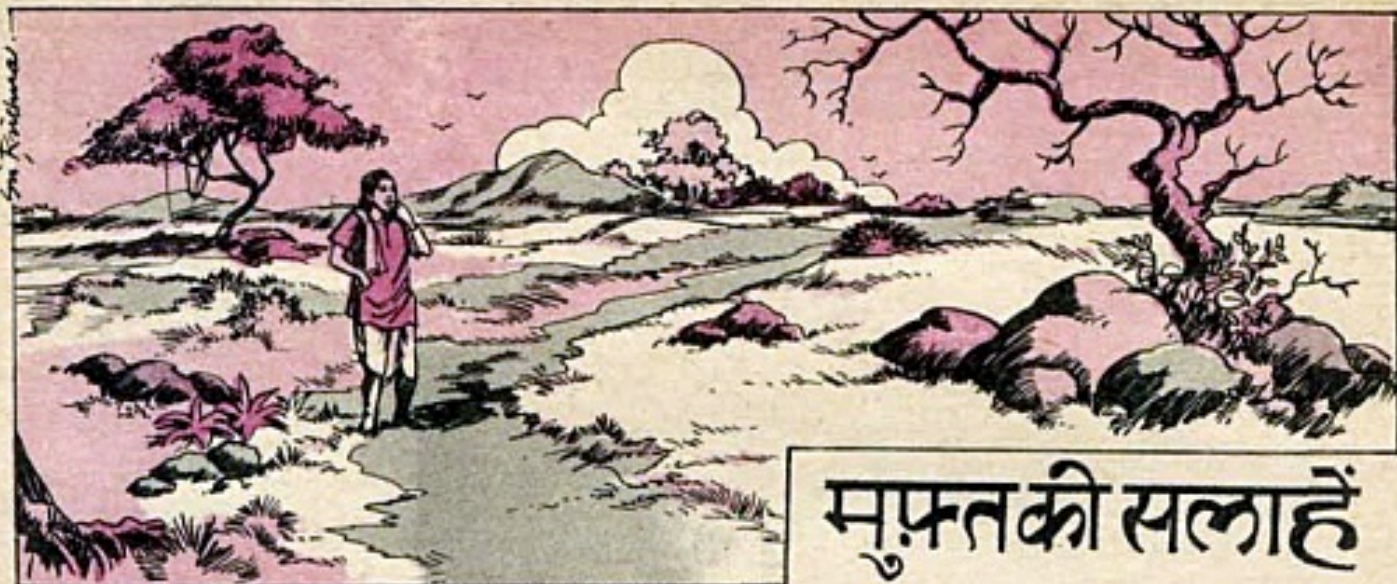
मुफ़्त की सलाहें

भूपति नामक एक अमीर ने अपने पड़ोसी गाँव सिरिपुर में दस एकड़ बंजर भूमि खरीद ली। वह अपने गाँव के काम-काजों में व्यस्त था, इसलिए उसने अपने पुत्र रमापति को बंजर भूमि को उपजाऊ बनाने का काम सौंप दिया।

भूपति ने अपने बेटे को सारा हाल सुनाकर समझाया—"यह काम तुम्हारे लिए नया है, सिरिपुर में हमारे दूर का एक रिश्तेदार नारायण है, ज़रूरत पड़ने पर तुम उनकी सलाह ले सकते हो।"

रमापति ने सिरिपुर में जाकर अपने पिता की ख़रीदी बंजर भूमि देख ली। उसमें घास और कंटीली झाड़ियाँ उग आई थीं। वह सोच ही रहा था कि उन्हें कटवा कर साफ़ कराने में कितने मजदूरों की ज़रूरत पड़ेगी। इस बीच गाँव का एक आदमी उसके पास आ पहुँचा।

उसने रमापति से कहा—"महाशय, मेरा नाम राजनाथ है। मैं इस गाँव में ईंटें बनाकर बेचा करता हूँ। अगर आप को कोई एतराज न हो तो इन झाड़ियों को कटवाकर ले जाऊँगा और इन्हें ईंटें जलाने के काम में इस्तेमाल करूँगा। इस तरह आप इन कंटीली झाड़ियों के कटवाने के काम से बच जायेंगे।"

रमापति ने राजनाथ को बताया कि वह कल आकर उससे मिल ले।

उस दिन शाम को रमापति ने यह बात अपने रिश्तेदार नारायण को बताई। उसने सलाह दी—"तुम जवान हो, फिर भी तुमने जल्दबाजी में आकर राजनाथ को वचन नहीं दिया। यहाँ पर ईंटों का व्यापार करने वाले कई लोग हैं। समझ लो, यहाँ लकड़ी की बड़ी माँग है। तुम ख़ुद मजदूर लगाकर सबसे पहले कंटीली

विश्वनाथ वर्मा

झाड़ियों को कटवा दो। उनके सूख जाने पर तुम उन लकड़ियों को अच्छे दाम पर बेच सकते हो!"

रमापति ने मजदूर लगाकर कंटीली झाड़ियों को कटवाया और उन सारी लकड़ियों को एक जगह ढेर लगवाया। वे लकड़ियाँ कुछ ही दिनों में अच्छी तरह से सूख गईं। लेकिन उन्हें खरीदने के लिए ईंटों के जो भी व्यापारी उसके पास आये, वे रमापति को उतने ही रुपये देने को तैयार हुए जितने उसने उन्हें कटवाने में खर्च किया था।

वे लोग बस यही बात कहने लगे—"इस गाँव के पास ही जंगल है। हम लोग अगर मजदूर बुलवा लेंगे तो लकड़ी के मिलने में हमें कोई कमी नहीं रहेगी। चूँकि आप ने यह काम कराया है, इसलिए मजदूरी के पीछे आप ने जो रुपये खर्च किये, हम बस ज़्यादा से ज़्यादा उतने ही रुपये आप को दे सकते हैं!"

अब रमापति सोचने लगा कि क्या निर्णय लिया जाय, इस तरह एक हफ़्ता-दस दिन बीत गये। बरसात भी शुरू हो गई। सारी लकड़ियाँ भीग गईं। रमापति ने उन्हें दूर फिकवाने के लिए किराये की गाड़ी तै करना चाहा, पर गाड़ीवाले ने सौ रुपये किराया माँगा।

यह बात मालूम होने पर नारायण गाड़ीवाले पर एकदम नाराज़ हो गया और रमापति से बोला—"सुनो, तुम मेरी सलाह के मुताबिक़ करो। ये लोग बड़े ही लोभी हैं, मेरे जान-पहचान का एक गाड़ी वाला है, मगर वह बड़ा ही शराबी है, उसके हाथ दस रुपये थमा दो, बस, वह ये सब कूड़ा-करकट दूर फेंक देगा।"

रमापति उस शराबी के हाथ दस रुपये देकर अपने गाँव चला गया।

एक हफ़्ते बाद रमापति जब सिरिपुर को लौट आया, तब गाँव के पटेल के यहाँ से उसे बुलावा आया। पटेल ने रमापति को आदर के साथ अपने पास बिठा लिया

और समझाया–"बेटा रमापति, तुमने जो काम करवाया है, सो ठीक नहीं है। तुमने अपने खेत की कंटीली झाड़ियों को कटवाकर पास के नाले में फिंकवा दिया। इधर जो बरसात हुई, उसमें बहकर इन झाड़ियों ने गाँव के तालाब के परनालों को बंद किया। उन्हें निकाल कर फिंकवाने में सौ रुपये खर्च हुए। यह रक़म तुम्हें तुरंत चुकानी पड़ेगी। तुम्हारे पिता मेरे जान-पहचान के हैं, इसलिए तुम पर जुर्माने लगाये बिना सिर्फ़ वास्तविक खर्च तुमसे वसूल कर रहा हूँ।"

रमापति की समझ में असली बात आ गई। शराबी ने मेहनत से बचने के लिए उन कंटीली झाड़ियों को निकट के नाले में फेंक दिया था। यह सब नारायण की मुफ़्त की सलाहों पर कान देने का परिणाम था।

रमापति ने पटेल से माफ़ी मांगकर सौ रुपये चुका दिये। यह खबर मिलते ही नारायण दौड़े-दौड़े रमापति के पास पहुँचा और बोला–"क्या पटेल साहब ने तुमसे सौ रुपये का जुर्माना वसूल किया है? यह तो बड़ी ज्यादती है। उस कमबख्त ने यह जानकर भी कि तुम मेरे रिश्तेदार हो, ऐसा दुस्साहस किया है? वह मुझसे जलता है। उसने यह जानकर कि तुम मेरे रिश्तेदार हो, इसीलिए यह दुष्ट कार्य किया है! चलो, हम शहर में जाकर पटेल पर नालिश करेंगे।"

रमापति ने अपने क्रोध पर जब्त करते हुए कहा–"नारायणजी, आप की इन मुफ़्त की सलाहों के लिए प्रणाम करता हूँ। मुझे अपने काम खुद करने दीजिए! कृपया मेरे कामों में दखल मत दीजिए!"

नारायण चुपचाप अपने घर लौट गया। उसके मन में यह शंका पैदा हुई कि उसने अपनी सलाहों के लिए उचित रक़म वसूले बिना मुफ़्त में सलाहें दीं, इसीलिए वह रमापति की दृष्टि में बेवकूफ़ बन गया है।

नौकर की अक्लमंदी

रत्नगिरि तथा धवलगिरि अड़ोस-पड़ोस के राज्य थे। एक बार धवलगिरि के राजा शूरवर्द्धन ने अचानक रत्नगिरि पर हमला कर दिया। धवलगिरि के पास जो सैनिक बल था, उतना रत्नगिरि के राजा के पास न था। रत्नगिरि के राजा कीर्तिवर्द्धन ने समझौते का प्रयत्न किया। शूरवर्द्धन समझौते के लिए तैयार हो गया और बातचीत करने के लिए रत्नगिरि पहुँचा। राजा के अंतःपुर में चर्चा करने के लिए दोनों राजाओं का समावेश हुआ। उस वक्त एक सेवक राजाओं को पिलाने के लिए ठण्डे पेय ले आया। उस वक्त उसके सामने एक समस्या पैदा हुई।

अगर पेय जल वह पहले अपने राजा कीर्तिवर्द्धन के हाथ दे तो शूरवर्द्धन यह सोचकर नाराज़ हो सकता है कि उसकी उपेक्षा की गई है। ऐसा न होकर अगर पहले शूरवर्द्धन के हाथ दे तो कीर्तिवर्द्धन यह सोचकर दुखी हो सकता है कि उसके सेवक ने ही उसका अपमान किया है। यों सोचकर उसने एक बुद्धिमानी का उपाय किया–" महाराज, आप से निवेदन है कि आप स्वयं इसे महाराजा शूरवर्द्धन के हाथ दे, अतिथियों का स्वागत सेवकों के द्वारा नहीं, आप ही के द्वारा होता है, यह तो आपके वंश की परिपाटी है!"

सेवक की ये युक्तिपूर्ण बातें सुनकर दोनों राजा खुश हुए। इस तरह सेवक की बुद्धिमानी से एक जटिल समस्या बड़ी आसानी से हल हो गई। –(शमशेर खाँ)
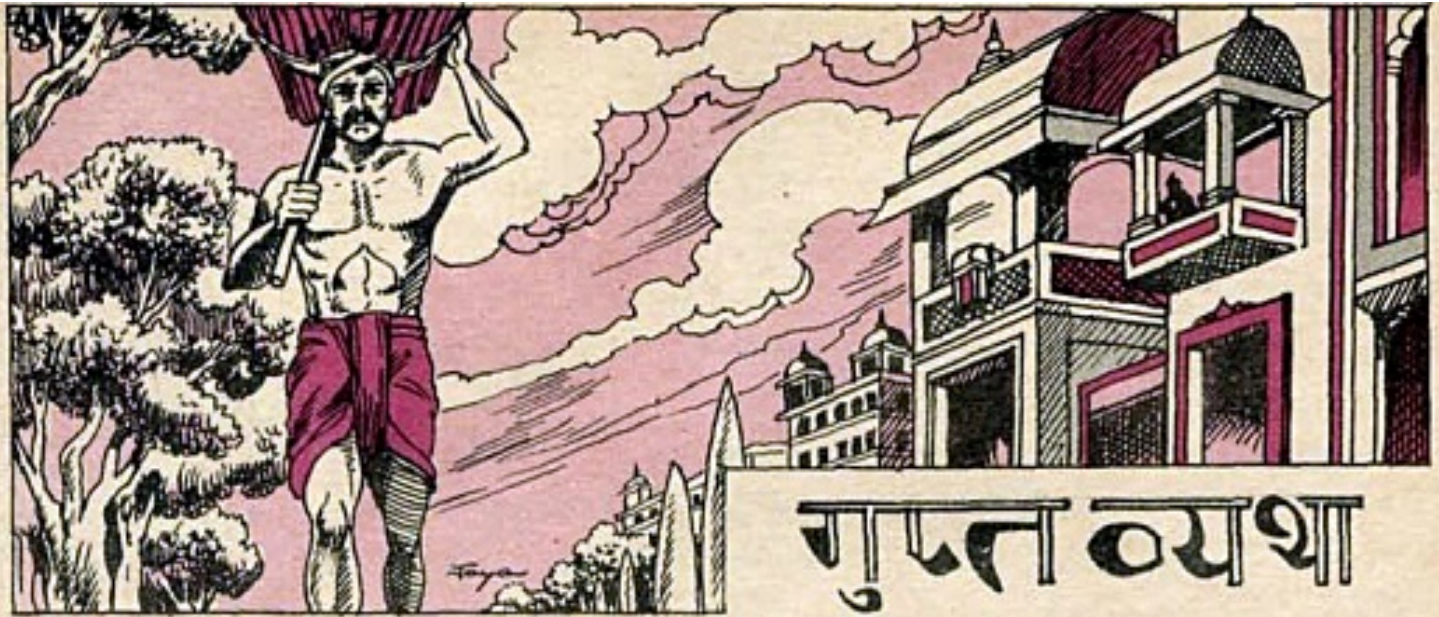
गुप्त व्यथा

एक गांव में एक लकड़हारा था। वह सबसे पहले जाग कर जंगल में चला जाता, लकड़ी काटकर हाट में बेच करके अपना पेट पालता था। यही उसका दैनिक कार्य था।

सब लोग यह सोचकर हमेशा उसी के यहाँ लकड़ी खरीदते थे कि अमुक लकड़हारा ईमानदार है। वह सही दाम लेकर सूखी लकड़ियाँ देता है। अगर जब भी लकड़ी की ज़रूरत पड़े तो उसीके यहाँ से खरीद लेना है। साथ ही सब लोग उसकी ईमानदारी की खूब तारीफ़ करते थे और उसकी इस बुरी हालत पर सहानुभूति भी दिखाते थे। लकड़हारा भी जो भी मिलता उसी से संतुष्ट हो जाता था।

वह रोज राजा के क़िले के सामने से गुजरता था। जंगल में जाने का वही एक मात्र रास्ता था। राजा अपने महल की छत पर से रोज उसे देखा करता था। वैसे राजा बड़ा दयालू था। गरीबों की मदद करने में चूकता न था। मगर ना मालूम क्यों, राजा जब भी उस लकड़हारे को देखता तब उसके मन में बड़ी पीड़ा पैदा हो जाती थी। धीरे-धीरे यह पीड़ा बढ़ती गई। लकड़हारा राजा की नज़र में जानी दुश्मन लगने लगा। आखिर राजा के मन में क्रोध यहाँ तक बढ़ा कि उसे मार डालने पर ही राजा के मन को शांति मिलेगी। इस पर राजा ठण्डे दिल से सोचने लगा–"इस मेहनती लकड़हारे ने मेरा क्या बिगाड़ा है? पर उसे देखते ही मेरे मन में नाहक़ यह पीड़ा क्यों पैदा हो जाती है? आख़िर इसकी वजह क्या है?"

इस तरह राजा अपने मन में तर्क-वितर्क करते असली कारण जाने बिना मनोव्यथा से पीड़ित रहने लगा।

दर असल राजा को इस तरह दुखी होने की ज़रूरत नहीं थी। राजा चाहे तो लड़कहारे को यह आदेश देकर कि आइंदा वह क़िले के सामने से न गुजरे, अपनी व्यथा को भुला सकता है, दूर कर सकता है। मगर राजा इस तरह अपने अधिकार का उपयोग करके अपनी पीड़ा को दूर करना नहीं चाहता था। इसका असली कारण जानने के लिए वह आतुर रहने लगा।

इतने में मंत्री राजा के पास आया। उसने राजा को दुखी देखा। राजा के मुँह से सारी बातें जानकर वह अचरज में आ गया। तुरंत मंत्री ने लकड़हारे का रहस्य जानने के लिए भेदियों को नियुक्त किया और वह भी बड़ी सावधानी से उस पर निगरानी रखे रहा। मंत्री ने कई जगह जाकर लकड़हारे के बारे में दरियाफ़्त किया, मगर सबने उसके बारे में यही कहा कि लकड़हारा बड़ा ही ईमानदार, मेहनती, न्यायशील और भोला-भाला है।

मंत्री को कई दिन तक उसके मूल कारण का पता न चला। मंत्री के मन में इस बात का संदेह भी होने लगा कि राजा आखिर उसे यह कहकर कहीं झिड़की न दे तो तुम असली कारण का पता न लगा पाये।

आखिरी कोशिश के रूप में मंत्री ने एक काम किया। अचानक एक दिन वह लकड़हारे के मकान की तलाशी लेने के ख्याल से उसके घर पहुँचा। चला तो गया पर उस टूटी-फूटी झोंपड़ी में आखिर उसे क्या दिखाई दे सकती है? सिर्फ़ झोंपड़ी के एक कोने में लकड़ी के गट्ठर पड़े हुए थे। इसलिए उसमें दोष ढूँढने के लिए मंत्री को कोई उपाय न सूझा।
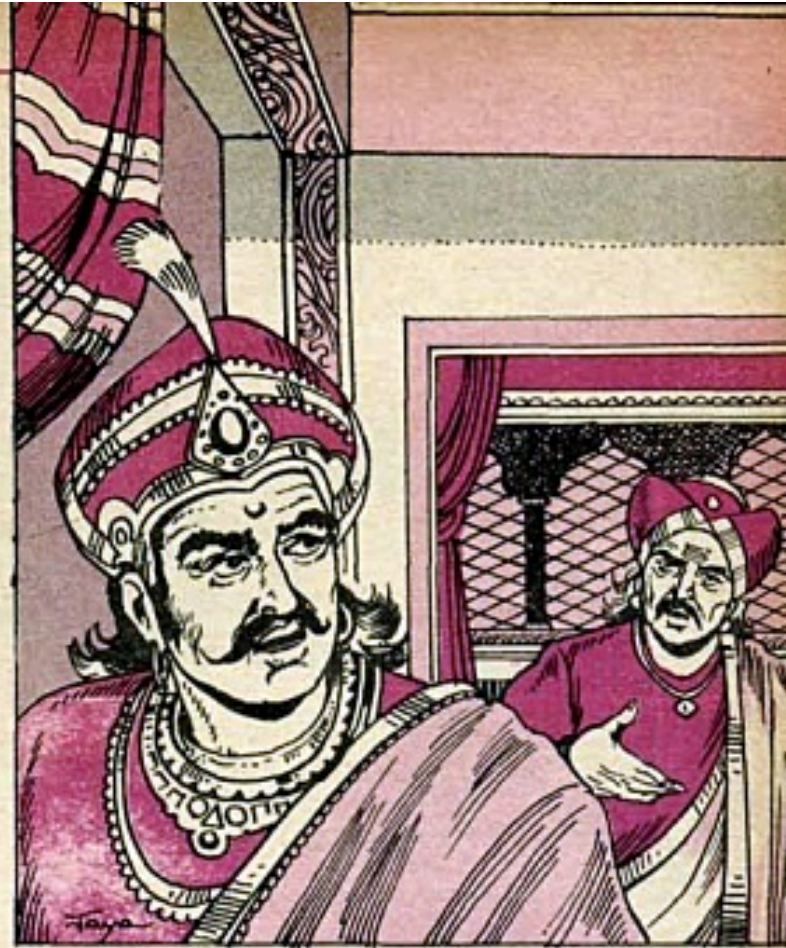
मंत्री को जब कुछ न सूझा, उसने वैसे ही पूछा—"देखो भाई, क्या बात है? क्या आज की लकड़ी बिकी नहीं? सारी लकड़ियाँ यहीं जो पड़ी हुई हैं?"

"अजी, ये लकड़ियाँ बिक्री के लिए नहीं हैं!" लकड़हारा गुनगुना उठा। मंत्री को आश्चर्य हुआ और वह लकड़ियों

के गट्ठरों के पास पहुँचा। पर मंत्री का लकड़ियों के पास जाना लकड़हारे को कुछ नापसंद सा लगा। मंत्री ने एक लकड़ी हाथ में लेकर पूछा–" यह लकड़ी कैसी ?"

लकड़हारे ने लाचार से होकर असली बात खोल दी–" अजी ये साधारण लकड़ियां नहीं हैं, चंदन की लकड़ियां हैं !"

"तब तो और क्या ? तुम तो बड़े ही भोले मालूम होते हो ? इन्हें बेचने पर तुम्हें अच्छे दाम मिल जायेंगे न ?" मंत्री ने उसके हितैषी बनकर पूछा।

इस पर लकड़हारे के चेहरे का रंग बदलने लगा। उसने मंत्री के पैरों पर गिरकर कहा–" अगर आप मुझे क्षमा कर दें तो मैं असली बात बता देता हूँ।"

मंत्री से अभय दान पाकर लकड़हारा बोला–" महानुभाव, मैं अपने मन की बात खोल देता हूँ। आप मुझे माफ़ कीजियेगा ! हमारे राजा बड़े ही दयालू हैं ! गरीबों के प्रति उनके मन में अपार दया है। मैं भी उनको अपने प्राणों से ज्यादा मानता हूँ। फिर भी मुझे अपनी गरीबी सता रही है। इसलिए मेरे मन में एक कुबुद्धि पैदा हो गई है। वह कुबुद्धि मेरे मन को खाये जा रही है। हमारे राजा बूढ़े हो चुके हैं। वे आखिर अब कितने दिन जी सकते हैं ? वे जिस दिन मर जायेंगे, उस दिन चंदन की लकड़ियों की बड़ी मांग होगी। इसलिए मैं अभी से इकट्ठा करके रख दूं तो उस दिन मुझे बड़ी अच्छी व खासी रक़म हाथ लग सकती है। मैं जो भी दाम कहूँ वह मुझे मिल जाएगा। इससे मेरी दरिद्रता दूर हो जाएगी !"

लकड़हारे के मुँह से ये बातें सुन मंत्री अवाक रह गया।

राजा को जब यह समाचार मिला, तब उसने लकड़हारे की व्यथा को समझ लिया, उसकी दरिद्रता दूर करने के लिए काफी संपत्ति देकर भेज दिया।

राजा ने तब समझ लिया कि उसके मन की गुप्त पीड़ा का असली कारण लकड़हारे की मानसिक व्यथा है।

श्रीकृष्ण को विस्मित देख रुक्मिणी मुस्कुरा कर बोली–"जी हाँ, नाथ! आज मेरे भीतर आनंद हिलोले ले रहा है! वह कन्या मणि आप पर कैसे आस लगाये बैठी है! मुझे उसके अन्दर ऐसी ममता दिखाई दी, जैसे कि आप को वह सारी निधि को छिपाने के जैसे अपनी मुट्ठी में भरना चाहती है!"

"तो तुमने अपनी बात नहीं बताई?" कृष्ण ने पूछा।

"मैं आप के अन्दर एक अणु बनकर रहना चाहती हूँ। चाहे आप किसी की मुट्ठी में क्यों न हो!" रुक्मिणी ने कहा।

"रुक्मिणी, तुमने एक महान विचार की कैसी सूक्ष्म व्याख्या की? इसीलिए में अपनी इच्छा से तुम्हें उठा लाया हूँ।" श्रीकृष्ण बोले।

"मुझे जो सच्ची बात मालूम हुई, वही मैं बता रही हूँ। सत्यभामा की ममता मेरी भावना से कहीं बड़ी है। उस ममता के भीतर प्रकृति की अनंत शक्ति भरी हुई है। स्वामी, मेरे अन्दर भक्ति भावना मात्र है!" रुक्मिणी कहे जा रही थी, उसे रोकते हुए श्रीकृष्ण मुस्कुरा कर बोले–"रुक्मिणी, तुम दर्शन की बातें मत बोलो!"

इसके बाद थोड़े दिन बीत गये। इस बीच दावानल की तरह यह बात चारों तरफ़ फैल गई कि "श्रीकृष्ण ने श्यमंतक मणि का अपहरण किया है।" यह खबर

१४. सत्यभामा का विवाह

सत्राजित स्वयं सब जगह प्रचार करते मणि के खो जाने के दुख में पागल की तरह भटकने लगा।

कृष्ण ने सोचा कि उन पर जो दोषारोप किया गया है, उसको लेकर चिंता करने से कोई फ़ायदा नहीं है, वे मन ही मन ध्यान करने लगे–"हे विघ्नेश्वर! यह सब आप की लीला है, आप की अब जैसी कृपा हो, वही होगा! तब उस मणि की खोज में जंगल की ओर चल पड़े।

बात यह थी कि सत्राजित ने सत्यभामा का विवाह शतध्वनु नामक राजा के साथ करने का निश्चय किया और अपने छोटे भाई प्रसेनजित को इस संबंध में शतध्वनु के साथ बातचीत करने भेजा। प्रसेनजित श्यमंतक मणि धारण कर जंगल के रास्ते जा रहा था, तब एक सिंह ने उस मणि से आकर्षित होकर प्रसेनजित को मार डाला। जांबवान ने उस सिंह का वध करके वह मणि अपनी पुत्री जांबवती को दे दिया।

मणि को धारणकर जाने वाले अपने छोटेभाई प्रसेनजित को न लौटते देख सत्राजित ने प्रचार करना शुरू किया कि उस मणि का अपहरण श्रीकृष्ण ने किया है। उधर शतध्वनु, जरासंध आदि सत्यभामा के साथ विवाह करने को लालायित थे, साथ ही वे लोग श्रीकृष्ण के दुश्मन थे। इसलिए उन लोगों ने सत्राजित के पास खबर भेजी कि वे अपने दुश्मन श्रीकृष्ण का संहार करने में सत्राजित की मदद करेंगे।

मणि की खोज में गये श्रीकृष्ण ने एक जगह मृत प्रसेनजित और सिंह के साथ जांबवान के पैरों के निशानों को भी देखा, तब वे सीधे जांबवान की गुफा तक पहुँचे।

उस गुफ़ा में नव यौवना जांबवती उस मणि को उछालते दिखाई दी। जांबवती जब बच्ची थी वह एक अनाथ राजकुमारी थी, जो जंगल में जांबवान को प्राप्त हो गई थी। जांबवान उसे अपनी पुत्री की तरह लाड़-प्यार से पालता था।

मणि को लेने के लिए श्रीकृष्ण ने जांबवती का हाथ पकड़ा, पर जांबवती अपने हाथ को छुड़ाने की कोशिश किये बिना लज्जित हो तिरछी नज़र से श्रीकृष्ण की ओर देख रही थी, उसी वक़्त उस गुफा में प्रवेश कर जांबवान ने श्रीकृष्ण पर हमला किया। इस पर उन दोनों के बीच बारह दिन तक लगातार बड़ा युद्ध हुआ। श्रीकृष्ण ने जांबवान की छाती पर अपनी मुट्ठी का प्रहार किया। तब जांबवान ने पहचान लिया कि श्रीरामचन्द्र ने ही श्रीकृष्ण के रूप में अवतार लिया है!

जांबवान ने श्रीकृष्ण को प्रणाम करके कहा—"हे कृष्ण, आप ने जांबवती का पाणिग्रहण किया, अब जांबवती आप ही की है।" इन शब्दों के साथ उसने श्यमंतक मणि तथा जांबवती को भी श्रीकृष्ण के हाथ सौंप दिया।

इसके बाद श्रीकृष्ण जांबवती तथा जांबवान को साथ लेकर द्वारका नगर पहुँचे और श्यमंतकमणि सत्राजित के हाथ सौंप दिया। जांबवान ने सारा वृत्तांत सत्राजित को सुनाया। सत्राजित ने पछताते हुए कहा—"श्रीकृष्ण, कहा जाता है कि अपनी संपत्ति खोनेवाला व्यक्ति पापी है, आप जो दण्ड देना चाहे सो मुझे दे दीजिए। मैं उसे भोगने के लिए तैयार हूँ।"

श्रीकृष्ण ने कहा—"सत्राजित, तुम्हारा पश्चात्ताप ही तुम्हारे लिए सही दण्ड है!"

इसके बाद अपने अपराध के बदले में सत्राजित ने श्यमंतक मणि तथा सत्यभामा को भी श्रीकृष्ण के हाथ सौंपकर स्वीकार करने की प्रार्थना की।

श्रीकृष्ण ने केवल सत्यभामा को ही स्वीकार करके श्यमंतक मणि लौटा दिया। इस पर सत्यभामा अपने पिता की ओर इस तरह देखा, मानो उसकी दृष्टि यह बता रही हो—"पिताजी, आप देखते हैं न कि मैं बड़ी हूँ या यह मणि?" फिर बोली—"आप ने एक बार विघ्नेश्वर की महिमा को पहचाने बिना अंट-संट

साथ विघ्नेश्वर ने सत्या और श्रीकृष्ण पर पुष्पाक्षतों की वर्षा की ।

सत्राजित ने भक्तिपूर्वक विघ्नेश्वर को प्रणाम करके कहा–"हे देव, मेरे अपराध को क्षमा कीजिएगा !"

श्रीकृष्ण ने भी विघ्नेश्वर को प्रणाम करके कहा–"विघ्नेश्वर! यह सब आप की लीला है! आप की कृपा से मैंने दोषारोप से मुक्त होकर मणि से भी अमूल्य सत्यभामा मणि को प्राप्त कर लिया है ।" इसके बाद विघ्नेश्वर यह कहते अंतर्धान हो गये–"जो लोग श्यमंतक मणि की कहानी सुनते हैं, वे दोषारोप से सदा दूर रहते हैं ।"

कुछ कह दिया । मैं विघ्नेश्वर के आश्रय में विश्वास करती हूँ! अब मेरी कामना की पूर्ति हो गई है ।" इन शब्दों के साथ विघ्नेश्वर का ध्यान करके अपने दोनों हाथ उठाकर उन्हें प्रणाम किया ।

उस वक़्त लीला स्वरूप के रूप में विघ्नेश्वर दर्शन देकर बोले–"भगवान सदा सर्वदा अपने लिए अत्यंत प्रिय सत्य के वशवर्ती हो जाते हैं! सत्य ही उनकी सम्पत्ति है ।" इस अर्थ को ध्वनित करने के अभिप्राय से वे बोले–"सत्यभामा के साथ विवाह करके श्रीकृष्ण सत्यापति के नाम से प्रसिद्ध होंगे ।" इन शब्दों के

सत्राजित श्रीकृष्ण के चरण धोकर कन्यादान करने के भाग्य पर फूले न समाया । श्रीकृष्ण ने जांबवती के साथ विवाह किया । जांबवान श्रीकृष्ण से बोले–"हे कृष्ण, जब आप रामावतार में थे, तब मैंने आप के साथ युद्ध करने की अभिलाषा प्रकट की थी । उस वक़्त मैंने कहा था कि आप जैसे दामाद को पानेवाले राजा जनक के प्रति मैं ईर्ष्या करता हूँ । मेरी वे दोनों इच्छाएँ अब पूरी हो गईं । मैं धन्य हो गया हूँ । जीवन से मुक्त हूँ ।" यों कहकर तपस्या करके तर जाने के ख़्याल से जांबवान जंगल में चला गया ।

थोड़े दिन बाद शतध्वनु ने प्रतीकार की भावना से सत्राजित को मार डाला और श्यमंतक मणि लेकर कृतवर्मा और अक्रूर को साथ लेकर भाग गया। श्रीकृष्ण ने सत्यभामा को सांत्वना देकर शतध्वनु को युद्ध में मार डाला, तब अक्रूर और कृतवर्मा मणि को लेकर भाग गये। उन्हें खोजकर श्रीकृष्ण मणि ले आये और सत्यभामा को उसके पिता के स्मृति-चिह्न के रूप में वह मणि दे दिया। इसके बाद श्रीकृष्ण ने मित्रविंदा, कालिंदी, भद्रा, नाग्नजिति और लक्षणा के साथ भी विवाह किया। अष्ट पत्नियों के साथ सुख-वैभव भोगते श्रीकृष्ण हर साल बड़ी श्रद्धा और भक्तिपूर्वक विनायक चतुर्थी मनाने लगे।

श्यमंतक मणि के प्रभाव से सत्यभामा का अंत:पुर अपार सोना से भर गया, उस सोने से सत्यभामा ने रत्नों के ढेर, अमूल्य आभूषण, रेशमी वस्त्र वगैरह खरीदे। श्रीकृष्ण की अष्ट महिषियों में वही एक ऐश्वर्यशालिनी थी। इस कारण धीरे-धीरे सत्यभामा के अन्दर इस बात का अहंकार बढ़ता गया कि इस अपार संपत्ति के साथ वही श्रीकृष्ण की अत्यंत प्रिय पत्नी भी है।

श्रीकृष्ण की पत्नियों में जांबवती वीणा वादन में बड़ी प्रवीणा थी। नारद मुनि गगन मार्ग में अपनी महती वीणा का वादन करते प्रयाण कर रहे थे, तब उन्हें परिहास पूर्ण अट्टहास सुनाई दिया।

नारद चकित हुए और चारों ओर दृष्टि दौड़ाते बोले—"हँसनेवाले कौन हैं?"

"हे नारद! आपको भी अभी बहुत कुछ सीखना है। आप अपने वीणा वादन पर फूले नहीं समा रहे हैं। इसीलिए हँसी आ गई।" यों आकाशवाणी सुनाई दी।

नारद सोचने लगे—"मुझे यह विद्या किसके पास सीखनी होगी?" तभी विघ्नेश्वर ने दर्शन देकर कहा—"जांबवती के यहाँ वीणा वादन की खूबियों को सीख लो।" इस पर नारद ने कृष्ण के

अनुग्रह के द्वारा जांबवती से वीणा-वादन के सारे रहस्य जान लिये ।

एक दिन श्रीकृष्ण रुक्मिणी के अंत:पुर में थे, तब नारद ने प्रवेश करके पारिजात पुष्प उन्हें भेंट किया । कृष्ण ने उसे रुक्मिणी के हाथ दिया । यह बात मालूम होने पर सत्यभामा रूठ गई । श्रीकृष्ण ने सत्यभामा को मनवाया, तब उसको साथ ले गरुड़ वाहन पर इंद्र के स्वर्ग में पहुँचे, नंदनवन से पारिजात वृक्ष को उखाड़ लाकर सत्यभामा के आंगन में रोप दिया । फिर भी सत्यभामा के मन में यह संदेह बना रहा कि कहीं कृष्ण का प्रेम उसके प्रति घट गया हो! उसके मन में यह इच्छा बढ़ती गई कि कृष्ण को अपने हाथ का खिलौना बनाकर अपने अंत:पुर में ही रखे रहना चाहिए!

एक दिन नारद ने सत्यभामा के महल में प्रवेश करके बताया कि यदि वह पुण्यक व्रत का आचरण करे तो श्रीकृष्ण उसके वशवर्ती हो जायेंगे । उस व्रत के नियमानुसार सत्यभामा ने श्रीकृष्ण को नारद के हाथ दान किया । इस पर नारद ने शर्त लगाई कि श्रीकृष्ण के वजन के बराबर सोना देकर कोई भी उन्हें खरीद सकते हैं ।

सत्यभामा ने अपना सारा सोना तुला में रखा । आखिर श्यमंतक मणि भी डाल दिया, लेकिन श्रीकृष्ण का पलड़ा भारी रहा, वह नीचे ही रह गया । इस पर सत्यभामा ने अपने अहंकार को त्याग कर रुक्मिणी से प्रार्थना की कि श्रीकृष्ण को छुड़ाने का कोई उपाय बतला दे ।

रुक्मिणी ने समझाया—"बहन, श्रीकृष्ण के बराबर तुलने वाली संपदा केवल भक्ति है । भक्तिपूर्वक समर्पित करने पर उनको तौलने के लिए तुलसी का एक पत्ता पर्याप्त है ।" इन शब्दों के साथ रुक्मिणी ने सत्यभामा के हाथ तुलसी का एक पत्ता दे दिया । सत्यभामा ने उस पत्ते को अपनी आँखों से लगाकर भक्तिपूर्वक तराज़ू में डाल दिया । तब कृष्ण का पलड़ा ऊपर

उठा। इस पर नारद तुलसी दल को लेकर चले गये।

इस घटना से सत्यभामा में ज्ञानोदय हुआ। ऐश्वर्य और मणि के प्रति उसके मन में जो मोह था, वह जाता रहा। श्रीकृष्ण को ही अपने सर्वस्व मानने की भक्ति भावना उसके मन में पैदा हुई। मणि के द्वारा प्राप्त सोना सत्यभामा ने श्रीकृष्ण की सलाह पर यात्रियों में बांट दिया। अपने पिता के यादगार में कई धर्मशालाएँ खोल कर वहाँ पर यात्रियों के लिए भोजन आदि का प्रबंध किया। वे धर्मशालाएँ सत्राजित के नाम पर सत्र या सराय कहलाये।

इसके थोड़े दिन बाद श्रीकृष्ण और बलराम की बहन सुभद्रा का विवाह हुआ। उस वक़्त सत्यभामा ने श्यमंतक मणि सुभद्रा को उपहार में दिया। इस प्रकार वह मणि पांडवों के हाथों में चला गया।

मणि के द्वारा जो सोना प्राप्त हुआ, वह युधिष्ठिर के लिए राजसूय याग संपन्न करने में सहायक सिद्ध हुआ। इसके बाद युधिष्ठिर जुआ खेलकर अपने साथ अपने भाइयों, द्रौपदी तथा राज्य को भी हार गये। राजसूय याग को देखने पर दुर्योधन के मन में युधिष्ठिर के प्रति ईर्ष्या की अग्नि भड़क उठी। द्रौपदी का पराभव करने का कुविचार उसके मन में पैदा हुआ। पांडवों के पुरोहित धौम्य ने अर्जुन को सलाह दी कि श्यमंतक मणि प्रारंभ से ही पांडवों की यातनाओं का कारणभूत बना हुआ है, इसलिए उसे त्याग दे। इस पर अर्जुन ने उस मणि को अपने धनुष की प्रत्यंचा पर चढ़ाकर सारी शक्ति लगाकर पृथ्वी पर छोड़ दिया। तब वह मणि पृथ्वी के गर्भ में चला गया।

पांडव जुए में कौरवों के हाथों में हार कर जब वनवास कर रहे थे, तब एक दिन नारद उनके पास पहुँचे। उन्हें सलाह दी कि फिर से खोये हुए राज्य को पाने के लिए वे बड़ी श्रद्धा और भक्ति के साथ विघ्नेश्वर की आराधना करें, साथ ही गणेश व्रत करके अज्ञातवास में चले जाये।

[५]

हसन और उसकी पत्नी गंधर्व चक्रवर्ती की पुत्री ने चालीस दिन वहाँ बिताये। एक दिन हसन की माँ ने सपने में उसे दर्शन देकर उसे भूल जाने की निंदा की। वह जोर से चीखते आँसू बहाते नींद से जाग उठा। उसकी दीदियाँ यह सोचकर दौड़ी-दौड़ी आ पहुँचीं कि न मालूम हसन पर क्या बीता हो। हसन की बीबी को भी उसके दुख का कारण मालूम न था।

हसन के मुँह से सारी बातें सुनकर उसकी छोटी दीदी बोली—"अब तुमको यहाँ पर रोकना मुनासिब नहीं है! तुम अपनी माँ के पास चले जाओ। लेकिन हमें वचन दो कि हर साल तुम यहाँ आकर थोड़े दिन हमारे साथ बिताओगे।"

यात्रा की तैयारी के बाद यह सवाल उठा कि हसन अपने घर कैसे पहुँचे? तब उसे बेहरान की ढफली याद आई। ढफली बजाने का तरीका उसे छोटी दीदी ने सिखाया। उसके बजाते ही असंख्य ऊँट, घोड़े व खच्चर उछलते-कूदते आये और क़तारों में खड़े हो गये। उनमें से उत्तम नस्ल के जानवरों को रोककर हसन ने बाक़ी जानवर लौटा दिये, फिर अपनी दीदियों से प्राप्त पुरस्कार लेकर उनसे विदा ली, तब अपनी पत्नी गंधर्व राजकुमारी को साथ ले अपने शहर की ओर चल पड़ा। यात्रा अच्छी चली।

आखिर हसन बस्त्रा नगर पहुंचकर अपने घर के सामने जा रुका, तभी उसे भीतर से उसकी माँ के रोने की आवाज़ सुनाई दी। इस पर उसने भी आँसू बहाते हुए मकान का दर्वाजा खटखटाया। हसन की माँ उठकर चली आई। दर्वाजा खोल

कर अपने बेटे को देखते ही लंबी साँस लेकर बेहोश हो गई ।

हसन ने अपनी पत्नी के साथ माँ की सेवा-शुश्रूषा की, इस पर वह जल्दी ही होश में आ गई । तब उसने अपनी माँ को अपनी पत्नी का परिचय कराया । अपनी बहू को देख वह बड़ी खुश हुई, जब उसे मालूम हुआ कि उसकी बहू गंधर्व चक्रवर्ती की बेटी है, तब वह फूली न समाई । उसकी समझ में नहीं आया कि ऐसी बहू का उसे किस तरह आदर-सत्कार करना है ।

हसन की माँ उसी वक़्त घर से चल पड़ी । दूकान से अच्छे-अच्छे वस्त्र चुन कर ले आई । सारे वस्त्र एक साथ उसने अपनी बहू पर ओढ़ा दिया ।

आखिर वह अपने बेटे से बोली– "बेटा, तुम्हारी पत्नी के रहने के लिए यह बस्त्रा नगर किसी भी तरह से लायक़ नहीं है । यहाँ पर हमने गरीबी की ज़िंदगी बिताई है । इसलिए हम तुरंत अपना मुकाम बगदाद के लिए बदल डालेंगे, वहाँ पर हम अपने को अमीर बताकर अपनी नई ज़िंदगी शुरू करेंगे ।"

यह सलाह हसन को भी पसंद आ गई । इसके बाद उसने सामान के साथ अपना मकान बेच डाला, ढफली की मदद से वह बगदाद पहुँचा । फिर नगर में जाकर हसन ने दलालों की मदद से एक लाख दीनारों में एक बढ़िया महल ख़रीदा । उस महल के लायक़ सामान और सजावट की चीज़ें भी ख़रीद लीं । तब अपनी पत्नी और माँ के साथ उस महल में प्रवेश किया । उसने इतने सारे दास और दासियाँ ख़रीद लीं कि ऐसे संपन्न परिवार बगदाद भर में इने-गिने ही थे । इसके बाद वह विलास और वैभव की ज़िंदगी बिताने लगा । नौ महीने बीतने के बाद उसकी पत्नी ने जुड़वें बच्चों को जन्म दिया । दोनों बहुत ही प्यारे और सुंदर लड़के थे । उनके नाम हसन ने नासिर

और मन्सूर रखा। इस खुशी में हसन ने कई दिन तक जश्न मनाया और लोगों को दावतें दीं।

एक साल के पूरा होते ही हसन ने अपनी दीदी की बात याद कर ली और उससे मिलने के लिए यात्रा की तैयारियाँ कीं। अपनी सभी दीदियों को उपहार में देने के लिए बहुत सारी चीज़ें ख़रीद लीं। तब अपनी यात्रा का समाचार माँ को सुनाकर कहा—"माँ, तुम एक ख़ास बात सुन लो। मैंने तुम्हारी बहू का पक्षीवाला खोल एक गुप्त प्रदेश में छिपाकर रखा है। मेरे लौटने तक तुम्हें उसे अपने प्राणों के समान बचाना होगा। तुम्हारी बहू थोड़ा पक्षी का स्वभाव रखती है। अगर तुम्हारी असावधानी से ही सही, तुम्हारी बहू ने पक्षी के उस खोल को देख लिया, तो बाक़ी सारे बन्धन उसको रोक नहीं सकते। तब उसके मन में उड़ने की इच्छा पैदा हो जाएगी, अगर वह यहाँ से चली गई तो फिर लौटकर न आयेगी। उसके चले जाने पर मानसिक बीमारी से मेरा मरना निश्चित है। तुम उसकी अच्छी तरह से देखभाल करो। वह लाड़-प्यार में पली है। मेरी बातों को मन में गांठ बांधकर रख लो!"

माँ ने समझाया—"बेटा, मुझे ज्यादा समझाने की ज़रूरत नहीं है। मेरी उम्र के बढ़ने पर भी मेरी बुद्धि ठिकाने है। तुम बेफ़िक्र होकर हो आओ। मैं तुम्हारी
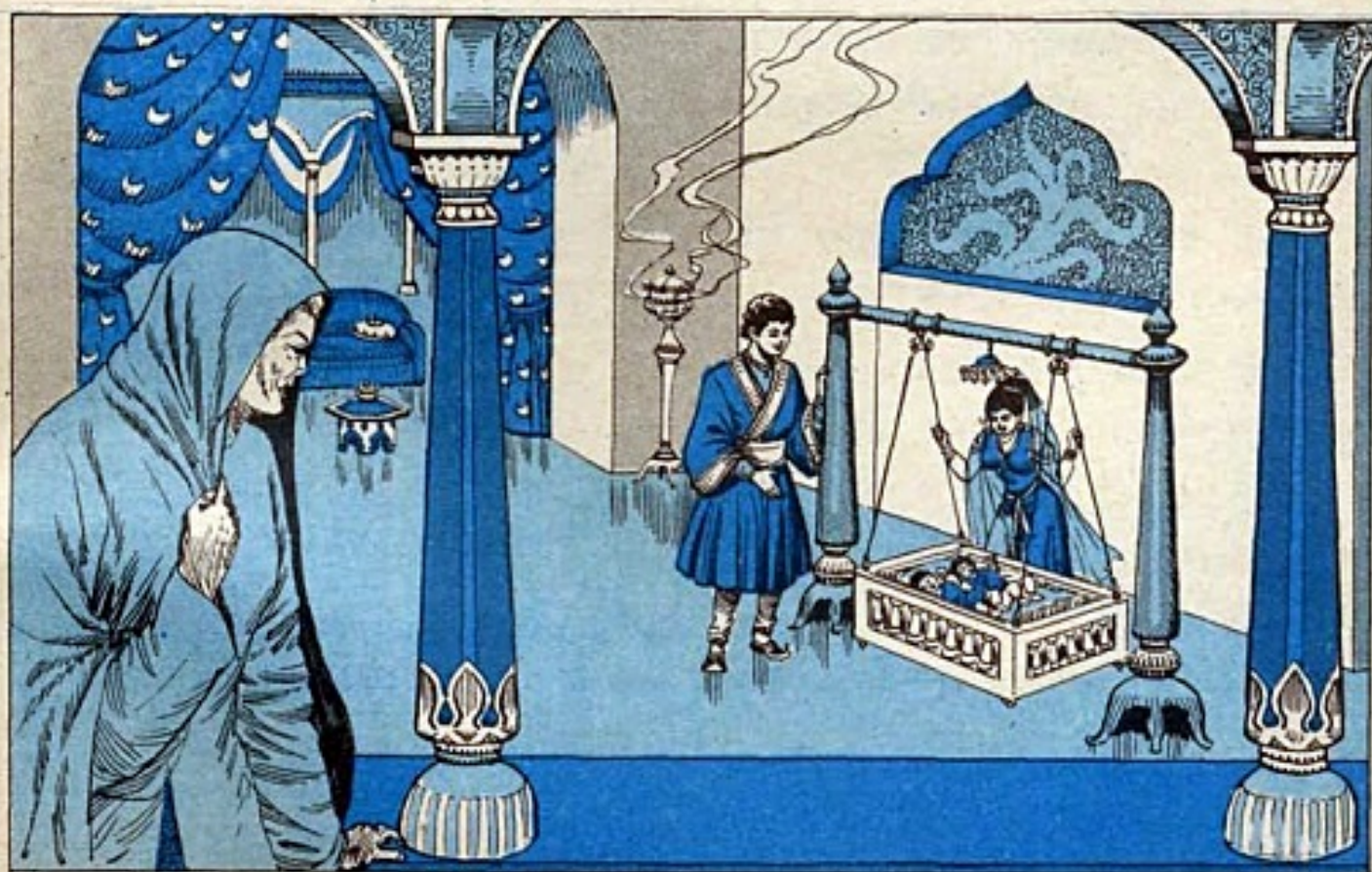
पत्नी की अच्छी तरह से देख-भाल करूँगी। लेकिन जहाँ तक हो सके, जल्दी लौट आओ।" मगर बेचारे उन्हें पता न था कि उनकी सारी बातें चक्रवर्ती की पुत्री ने आड़ में से सुन लीं।

इसके बाद हसन अपनी पत्नी और दोनों बच्चों को चूमकर घर से निकल पड़ा।

हसन को देख उसकी दीदियाँ खुशी के मारे उछल पड़ीं। खासकर छोटी दीदी की खशी का कोई ठिकाना न रहा। उसने अपने महल को फूल-मालाओं और रंग-बिरंगे दीपों से सजाया। हसन ने उसे अपने जुड़वें बच्चों का समाचार सुनाया। इसके बाद वह भी अपनी दीदियों के साथ शौक से शिकार खेलने चला गया। उनके साथ उसने अपना समय आनंदपूर्वक बिताया।

हसन के चले जाने पर उसकी पत्नी दो दिन तक सास से लगी रही। तीसरे दिन सूर्योदय के समय वह अपनी सास से बोली–"मैं स्नान करने जाना चाहती हूँ। दिल लगाकर स्नान करके कई दिन बीत गये हैं।"

"बेटी, यह तुम क्या कहती हो? यह नगर तो हमारे लिए एकदम नया है। हमें पता तक नहीं कि गुस्लखाना कहाँ पर है? पहले जाकर सारा इंतजाम करने के लिए तुम्हारे पति भी तो यहाँ पर नहीं हैं। मैं तो बूढ़ी हो गई हूँ। इसलिए तुम्हारा साथ भी नहीं दे सकती! तुम चाहोगी तो तुम्हारे नहाने के लिए मैं सारी चीज़ें इकट्ठी करके गरम पानी तैयार कर देती हूँ। तुम हमारे ही घर में आराम से नहा लो। इससे तुम्हें कोई तक़लीफ़ भी न होगी।" हसन की माँ ने समझाया।

"सासजी, नहाने जाने के लिए भी अगर आप आपत्ति उठाती हैं, तो काम कैसे चलेगा? आखिर गुलामों पर भी इतने सारे बंधन नहीं होते! इस तरह की ज़िन्दगी जीने के बदले मौत कहीं अच्छी है न?" हसन की पत्नी ने रूठकर कहा। अपनी बहू के मुँह से ये शब्द सुनकर

बूढ़ी मन ही मन दुखी हो गई, तब वह स्नान के बाद पहनने के लिए जरूरी इत्र वगैरह लेकर बोली–"चलो बेटी, तुम अपनी इच्छा के अनुसार करो। तुम्हारे पति के नाराज़ होने पर मैं उसे समझा दूंगी। सारा बोझ मैं अल्लाह पर डाल देती हूँ।" यों कहकर वह अपनी बहू को साथ ले बगदाद में सब से ज्यादा मशहूर गुस्लखाने में ले गई।

हसन की बीबी ने जब गुस्लखाने में क़दम रखा, तब वहाँ की औरतें अचंभे में आ गईं और आँखें फाड़-फाड़ कर उसकी ख़ूबसूरती को देखती ही रह गईं। कुछ औरतें तो नहाना तक भूलकर उसकी ओर ताकती ही रह गईं।

उसी वक़्त रानी जुबेदा की दासी तूफा भी उसी गुस्लखाने में नहाने को आ पहुँची। वह एकटक हसन की बीबी को देखती ही रह गई, जब नहाकर हसन की बीबी लौटने लगी, तब तूफा भी उसके पीछे उसके मकान तक चली गई, फिर खलीफा के महल को लौटने पर उसने जुबेदा रानी को हसन की बीबी की ख़ूबसूरती की तारीफ़ के पुल बांधते सारी कहानी सुनाई।

तूफा के बारे में जुबेदा अच्छी तरह से जानती है कि वह मामूली ख़ूबसूरती की परवाह तक नहीं करती। किसी की ख़ूबसूरती का वह ज्यादा बखान तक नहीं करती। इसलिए उस अनोखी ख़ूबसूरती वाली युवती को खुद देखने की इच्छा जुबेदा रानी के मन में पैदा हो गई। वैसे तूफा उस ख़ूबसूरत औरत का नाम तो नहीं जानती, मगर उसने उस औरत के मकान आदि का सारा हुलिया जुबेदा रानी को बतला दिया।

इस पर जुबेदा ने खलीफा के अंगरक्षक मस्रूर को बुलाकर उसे कड़ा आदेश दे दिया–"सुनो, तुम अमुक महल में जाकर उसमें रहने वाली युवती को अपने साथ बुला ले आओ। अगर तुम अकेले ही लौट आये तो तुम्हारा सिर कटवा डालूंगी।" (और है।)

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २५)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ मई १९८२ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

P. Sundaram

Devidas Kasbekar

- ★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों।
- ★ मार्च १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा।
- ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) २५ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा।
- ★ दोनों परिचयोक्तियाँ कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें : **चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६**

जनवरी के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो : **बच्चे हो रहे साक्षर!**

द्वितीय फोटो : **हम क्यों रहें निरक्षर!!**

प्रेषिका : **सीमा साहा,** २१ हेच/१३ दत्ता बगान, राजा मनीन्द्र रोड, कलकत्ता-३७

पुरस्कार की राशि रु. २५ इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 188, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

The stories, articles and designs contained herein are exclusive property of the Publishers and copying or adopting them in any manner will be dealt with according to law.

चन्दामामा के ग्राहकों को सूचना

यदि आप अपना पता बदल रहे हों, तो पांचवीं तारीख से पहिले ही अपनी ग्राहक-संख्या के साथ, अपना नया पता सूचित कीजिये। यदि विलम्ब किया गया, तो अगले मास तक हम नये पते पर 'चन्दामामा' न भेज सकेंगे।

आपके सहयोग की आशा है।

डाल्टन एजन्सीस, मद्रास-६०० ०२६

Shattered Dreams.....
Fallen values
jeoparadise compatibility...
only good guidance
and counselling will
promote happy marriage.
श्रीमान श्रीमती
बी. नागी रेड्डी
प्रस्तुत करते हैं,
एक नयी महान
फिल्म
Director : VIJAYA REDDY
Story : K. S. RAO
Dialogue : RAJ BALDEV RAJ
Lyrics : MAJROOH SULTANPURI
Music : RAJESH ROSHAN
Camera : P. L. RAI
Art : S. KRISHNA RAO
Editing : K. BALU
Associate Director : VIJAYAKUMAR RAICHURA
Stills : R. NAGARAJA RAO
Production Controller : M. VEERA RAGHAVULU
RECORDS ON HMV
Frame to Frame a Family Film
विजय प्रॉडक्शन्स - चित्र

बच्चों के लिए चन्दामामा की एक और भेंट-
नया हिन्दी पाक्षिक

एक अनोखी नगरी की सैर!

अब बच्चों का प्यारा मासिक "चन्दामामा" अपना नया हिन्दी पक्षिक पेश करता है- "चन्दामामा क्लासिक्स और कामिक्स"। मनोरंजक, दिलचस्प, रंग-बिरंगे पन्ने, केवल २-०० रुपये में। वार्षिक शुल्कः सिर्फ ४८ रुपये। अपने निकट के समाचारपत्र-विक्रेता से पूछिये या आज ही इस पते पर लिखिए :

डाल्टन् एजन्सीस्
चन्दामामा बिल्डिंग्स्
आरकाट रोड, मद्रास -६०० ०२६.

महीने में दो बार!

वॉल्ट डिस्नी की विचित्र पुरी

कॉमिक्स जगत् को एक नयी देन

7017-HN

Freshness in a Flash.
Because only Flash
now has an exclusive sky-blue
mouth purifier.
Flash
Flash
Flash
everest/82/FL/81
Flash
DENTAL CREAM
Flash a smile. Pass it on.
The sky-blue mouth purifier in Flash will freshen your breath the moment you start brushing your teeth, and will leave your entire mouth sparkling clean and fresh. No wonder Flash won the world selection award in Vienna for its quality for total mouthcare. Because the care that comes in Flash will brighten your healthy smile day after day.